

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अक्टूबर 2025

अंक 469 ● अक्टूबर 2025

धूकमुक

बाल विज्ञान पत्रिका

मूल्य ₹50

1

मेरा पञ्चा विशेषांक

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर-दिसम्बर अंक बच्चों का विशेषांक होता है। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे फैले होंगे। तो इस अंक के लिए अपनी रचनाएँ हमें ज़रूर भेजना।

ये कुछ विषय हैं जिन पर तुम अपनी रचनाएँ भेज सकते हो – लिखकर या चित्र बनाकर:

- अपने गाँव-शहर या गली-मोहल्ले की सबसे मजेदार जगह। यह भी बताना कि वह मजेदार क्यों है।
- पहला अनुभव – जब पहली बार अकेले सब्जी-दूध या कोई सामान खरीदने गए हो, या बिजली का बिल जमा करने या टिकट खिड़की पर खड़े होकर टिकट लेने गए हो आदि।
- अपने घर की किसी सबसे पुरानी चीज़ की कहानी (फोटो या चित्र सहित) – जैसे दादी-नानी के ज़माने का सरौता, घड़ी, सन्दूक, लालटेन या कोई भी और चीज़।
- तुम्हारा कोई ऐसा सीक्रेट जो तुम साझा करना चाहो।
- हम सभी सपने देखते हैं। अपने किसी सबसे खूबसूरत या डरावने सपने का चित्र बनाओ।
- अगर कोई व्यक्ति तुम्हारा सुपरहीरो है, तो बताना कि वह तुम्हारे लिए सुपरहीरो क्यों है।
- अपने पसन्दीदा लेखक/चित्रकार/कलाकार को चिट्ठी, यह बताते हुए कि तुम्हें उनकी किसी किताब/फ़िल्म/चित्र में क्या पसन्द है।
- अपने पसन्दीदा खेल का कोई रोमांचक मैच जो तुम्हें याद रह गया हो।
- किसी ऐसे पकवान की रेसिपी (उसकी फोटो/चित्र सहित) जो बाजार में नहीं मिलते।
- चकमक को चिट्ठी लिखो - हाल ही में पढ़े चकमक के अंकों में तुम्हें क्या अच्छा लगा? आगे तुम और क्या पढ़ना चाहोगे?
- क्यों-क्यों नवम्बर-दिसम्बर का सवाल - क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पर लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा है? इस दौरान तुमने क्या-क्या देखा? क्या अच्छा लगा और क्या बुरा, और क्यों?

इनके अलावा खुद की रची कहानियाँ-कविताएँ, किस्से, लेख, चित्र, चुटकुले, पैटिंग, कॉमिक के साथ-साथ तुम चकमक के अन्य कॉलम जैसे माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, तुम भी जानो, पुस्तक समीक्षा, फ़िल्म चर्चा और भूलभुलैया के लिए भी अपनी रचनाएँ ज़रूर भेजना।

ध्यान रखना कि फोटो खींचते वक्त चित्र किसी भी कोने से कटे नहीं और उस पर ठीक से रोशनी पड़े। कैमरे की सेटिंग में पिकवर क्वालिटी हाई रेज़ोल्यूशन पर रखना। और चित्र को व्हॉट्सएप में डॉक्यूमेंट की तरह अटैच करके भेजना।

रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है - 5 अक्टूबर।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पूरा पता ज़रूर लिखना। रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हॉट्सएप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

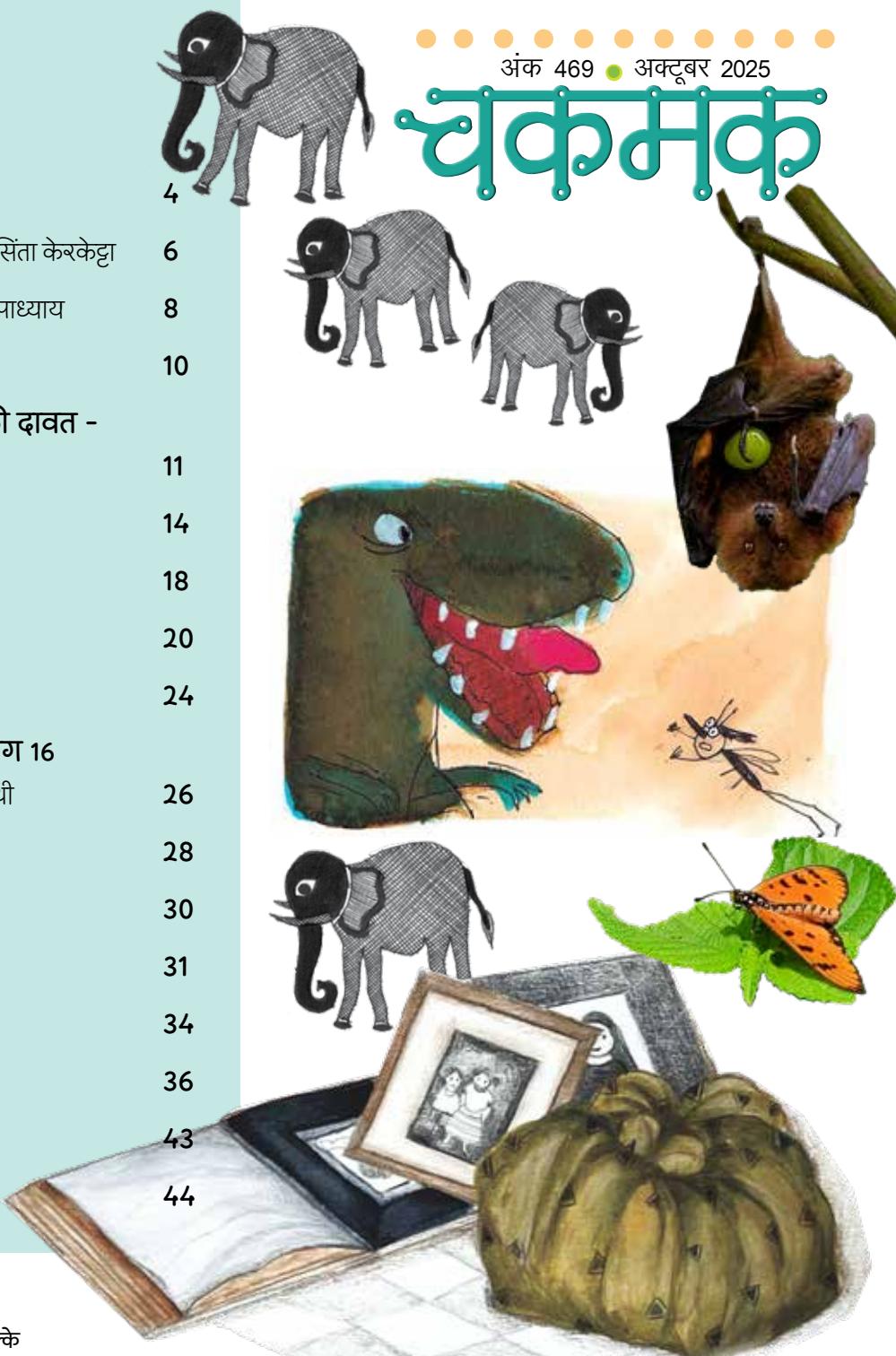
चित्र: नरेश पासवान

● ● ● ● ●
इस बार

हवा में तैरते रंग - जितेश शेल्के	4
उससे मेरा सम्बन्ध क्या था? - जसिंता केरकेटु	6
खल्बमों में सिर्फ तस्वीरें... - संज्ञा उपाध्याय	8
अन्तर ढूँढो	10
रहस्यमयी बीज और चमगाढ़ों की दावत - - पीयूष सेक्सरिया	11
काटना - पार्वती सुब्रमणियन्	14
बेसुरा राग - वीरेन्द्र ढुबे	18
क्यों-क्यों	20
चित्रपहेली	24
मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 16 - आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी	26
तुम भी बनाओ - हंस	28
भूलभुलैया	30
ज़िन्दगी का सफर - मोहम्मद यासिर	31
माथापच्ची	34
मेरा पत्ता	36
तुम भी जानो	43
जंगल का ड्रोंगो - कुलदीप ढास	44

अंक 469 • अक्टूबर 2025

चक्मकः



आवरण कोलाज: कनक शशि, फोटो: जितेश शेल्के

सम्पादक
विनता विश्वनाथन
सह सम्पादक
कविता तिवारी
विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिजाइन
कनक शशि
सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक
वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

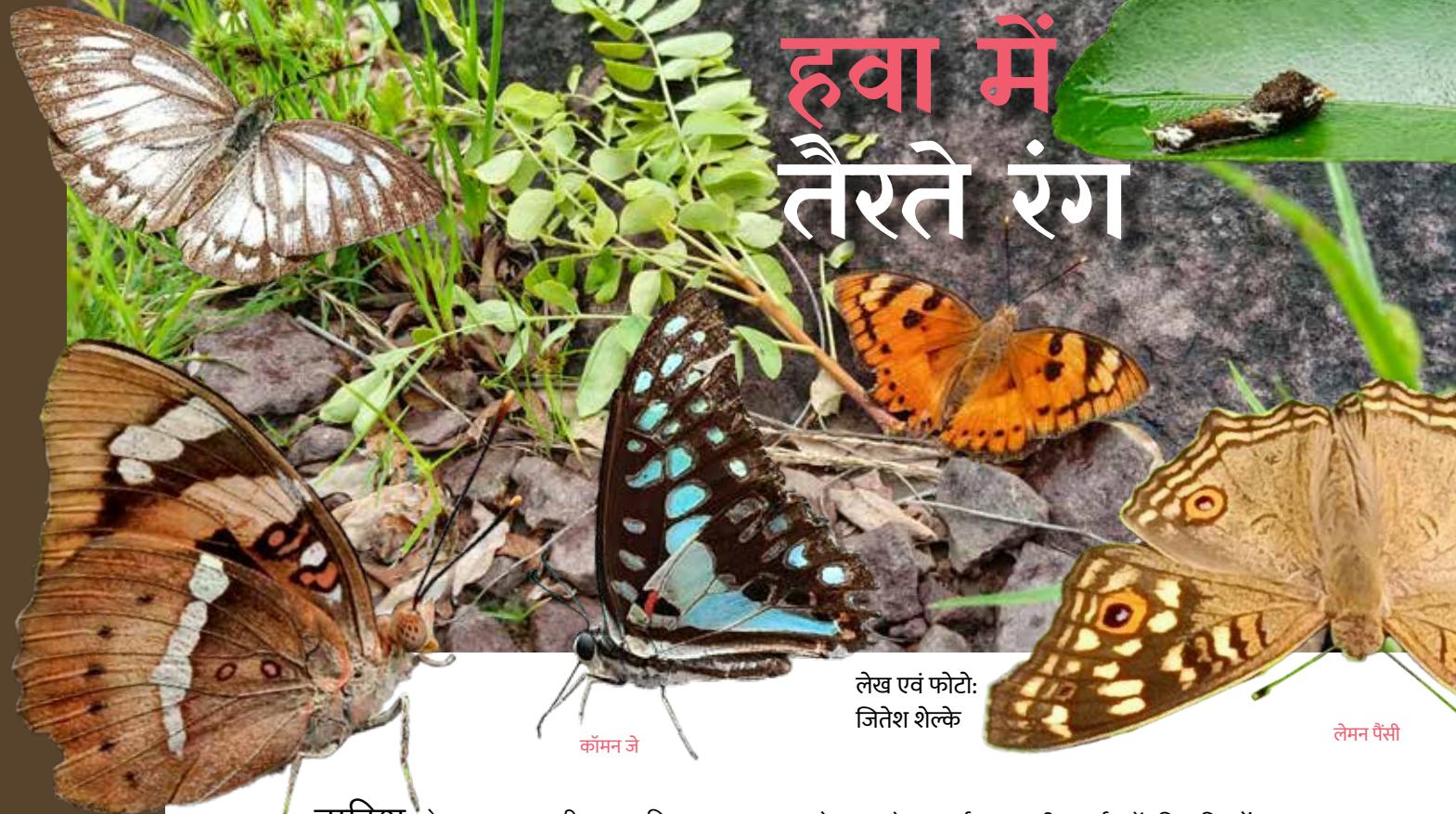
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

चक्मकः

3

अक्टूबर 2025

हवा में तैरते रंग



बारिश के बाद हल्की धूप निकल आई थी। गीली मिट्टी से सौंधी खुशबू आ रही थी। आसमान में बादल तैर रहे थे। माहौल एकदम शान्त था। तभी हवा में कुछ हल्की-सी हलचल नज़र आई। धीरे-धीरे नज़र घुमाने पर लगा, मानो हवा में किसी ने रंग की पतली परत बिछा दी हो। पंख इतने नाजुक कि लगता था हवा का हल्का-सा झोंका भी उन्हें चीर देगा। पर वे नाव के चप्पुओं जैसे हवा में रास्ता बनाते हुए उन्हें दाँ-बाँ, ऊपर-नीचे, गोल-गोल हर दिशा में उड़ा ले जा रहे थे।

भोपाल के स्वर्ण जयन्ती पार्क में तितलियों का यह दृश्य रंगों के किसी उत्सव जैसा लग रहा था। पंखों का कोण बदलते ही उनके रंग हल्के और गहरे दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी पंख बन्द होने पर वे पत्तों जैसी लगती थीं, और पंख खुलते ही लगता था जैसे किसी ने रंग बिखेर दिए हों।

कुछ तितलियाँ फूलों पर मँडरा रही थीं, तो कुछ मिट्टी पर झुण्ड बनाकर बैठी थीं। मानो बच्चे कंचे खेलने बैठे हों। यह उनका मड-पडलिंग व्यवहार है। यानी वे मिट्टी से ज़रूरी खनिज लेती हैं। अगली बार जब तुम तितलियाँ देखो, तो फूलों के साथ-साथ मिट्टी पर बैठी उनकी इस छोटी-सी सभा को भी ध्यान से देखना।

डार्क सेरुलिअन

कॉमन एमिग्रेट



लाइम स्वालोटेल



कॉमन टाइगर प्यूपा

इस पार्क में मुझे कई किस्म की तितलियाँ दिखीं – चॉकलेट पैसी, प्लेन टाइगर, स्ट्राइप टाइगर, कॉमन लेपर्ड, कॉमन क्रो, लेमन पैसी आदि। इन नामों में भी कहानी छिपी है। किसी को उसके पंखों पर बनी धारियों के कारण “टाइगर” कहा गया है, तो किसी को धब्बों के लिए “लेपर्ड”, और किसी को गहरे काले पंखों के कारण “क्रो”। अमूमन तितलियों के नाम उनके रंग और पैटर्न पर आधारित होते हैं। इससे उन्हें पहचानना आसान हो जाता है। पर यह तरीका हर तितली के नाम के साथ फिट नहीं बैठता।

पार्क में मुझे कुछ तितलियों के पंखों पर गोल-गोल निशान भी दिखे। इन्हें “आइस्पॉट” कहते हैं। ये नकली आँखें दुश्मनों को डराने या उनका ध्यान भटकाने के काम आती हैं।

पत्तियों पर अण्डे, पत्ते चबाते कैटरपिलर और पौधों की डण्डियाँ



लेमन एमिगरेट



कॉमन लेपर्ड



बैगवर्म मॉथ
कैटरपिलर

से लटके प्यूपा – हर दृश्य जैसे उनके जीवन-चक्र की कहानी सुना रहा था। मुझे बरसों पहले का वो दिन याद आ गया, जब कड़ीपत्ता (मीठी नीम) तोड़ते समय पहली बार तितली के अण्डे दिखे थे। वह रोमांच आज फिर से ताजा हो उठा।

पार्क से निकलते हुए मुझे एक बैगवर्म मॉथ कैटरपिलर भी दिखा। वो छोटी-छोटी लकड़ियाँ जोड़कर अपना घर अपने साथ ढो रहा था। पास के कुछ पत्ते स्पिटलबग के झाग से ढँके थे, जिन्हें अक्सर लोग थूक समझ लेते हैं।

मैं सोचने लगा प्रकृति हर मौसम में अपनी किताब खोल देती है; बस हमें ठहरकर उसे पढ़ना आना चाहिए। यह किताब बाकी सारी किताबों से ज्यादा रोमांचित करती है।



पिएरो



बैग



साइक



कॉमन क्रो



टॉनी कॉस्टर

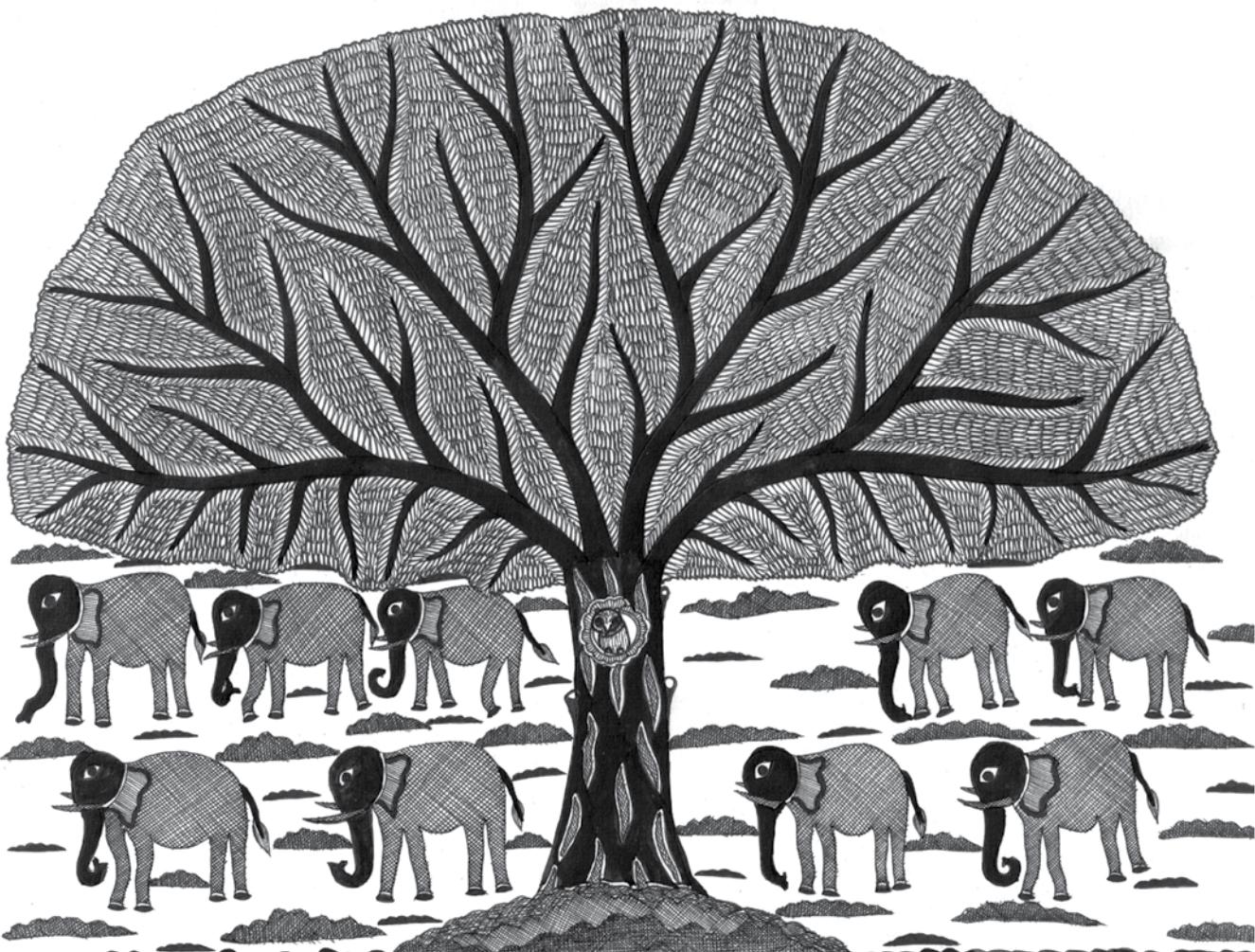


वाइट ऑरेंज टिप



वो आम का पेड़
 ठीक यहीं था सड़क किनारे
 जहाँ से मुझे हर दिन
 बस पकड़नी होती
 बस जब तक पहुँचती नहीं
 वह मुझे तंग करता
 पहले मेरी ओर एक आम फेंकता
 मैं खुश होकर जैसे ही दाँत गड़ती
 “ये तो भोड़े खट्टे हैं” गुस्से में बोलती
 वह हँसता
 तुम बस में सोती रहती हो ना!
 यह नींद भगाने के लिए था
 अच्छा अब मीठे आम गिराता हूँ
 सच्ची में!
 और तब तक बस आ जाती।

उस दिन बस पकड़ने सड़क पर पहुँची
 वह गायब था।
 सालों से मेरा ठीक यहीं इन्तजार
 करता
 वह आम का पेड़
 कहाँ जा सकता है भला?
 दूसरे दिन अखबार में यढ़ी
 उसके मारे जाने की खबर।
 मैं उस दिन खूब रोई
 जैसे मारा गया हो कोई घर का अपना
 मैं उस दिन सोई नहीं रात भर
 कैसे काट दिया गया वह यहीं
 सोचकर।
 दूसरे दिन दौड़ी उधर
 सोचा उसकी गन्ध समेट ले आऊँगी
 अपने आँगन में रोप दूँगी



चित्र: नरेश पासवान

उसकी गन्ध बढ़ेगी
तब मैं उसकी गन्ध लेकर
घर से निकलूँशी
लौटँशी जब उसकी गन्ध को
आँगन में खड़ी पाऊँशी।

मगर मेरे सपने टूट गए
धूल का बवण्डर जब हँसने लगा मुझ
पर
देखा, मेरे आम के पेड़ की गन्ध
धूल के बवण्डर से लड़ रही थी
बिलकुल गुत्थमगुत्था।
मैं भागी थाने की ओर
यह रपट लिखवाने कि
मेरे साथी की हत्या हुई है
थाना ठहाके लगाकर हँसने लगा
डण्डा दिखाता हुआ बोला
पहले तू बता
तेरा उसके साथ सम्बन्ध क्या था?

मैं आज तक दर-दर भटक रही
यही बताने के लिए
कि उसके साथ मेरा सम्बन्ध क्या था
मगर वहाँ कोई नहीं अब
गायब हो चुका है सब
अब सिर्फ दूर-दूर तक धूल उड़ाती
चौड़ी सपाट सड़कें भर हैं।



जसिंता केरकेट्रा

झारखण्ड में चौड़ी सड़क के लिए
कटे पेड़ों को देखते हुए

चित्र: कनक शशि

यह कविता ईश्वर और बाजार कविता-संग्रह से
ली गई है। प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन
प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन वर्ष: मार्च, 2022

उससे मेरा
सम्बन्ध
क्या था?

एल्बमों में सिर्फ तस्वीरें नहीं रहतीं



संज्ञा उपाध्याय

चित्रः शुभांगी चेतन

एल्बम देखना कितना अच्छा लगता है ना! पुरानी-पुरानी तस्वीरों वाले एल्बम। जाने-पहचाने चेहरों को नए ढंग से पहचानना। देखी हुई जगहों को फिर देखना। रुकी हुई तस्वीर चलती हुई फिल्म में बदल जाती है, है ना? हम सोचने लगते हैं, “अरे! अम्मी भी कभी छोटी थीं!” और अम्मी से पूछो, तो वे पूरी कहानी सुनाने लगती हैं। सुनते वक्त उनका चेहरा देखो, तो एल्बम वाली लड़की दिखती है, अम्मी नहीं...

अम्मी की लोहे वाली अलमारी में दीगर सामानों के साथ बहुत सारी एल्बमें भी रहती हैं। एक पुराने मेज़पोश में बँधी हुई बहुत बड़ी-बड़ी, बहुत पुरानी एल्बम हैं। पुरानी से भी पुरानी। पता नहीं किन-किन लोगों की तस्वीरें इनमें बन्द हैं। सब ब्लैक एंड व्हाइट। मोटे-मोटे काले कागजों पर चिपकी। हर मोटे काले कागज से पहले एक

पतला सफेद मोमी कागज है। जैसे तस्वीरों पर एक झीना परदा पड़ा है। मोमी कागज पलटते ही तस्वीरें साफ हो जाती हैं। उन एल्बमों में से एक अजीब गन्ध आती है। अम्मी कहती हैं, “यह पुराने वक्त की गन्ध है”

जब फुफ्फी हमारे यहाँ आती हैं, तो कभी-कभार उस गठरी को खोलकर बैठ जाती हैं। दादीअम्मी से पूछती हैं, “ये कौन? और वे कौन?” गठरी के साथ ही दादीअम्मी के किस्सों का पिटारा भी खुल जाता है। कभी कोई बात बताते हुए वे दुपट्टे से अपना मुँह ढाँप लेती हैं। उनके कन्धे ज़ोर-ज़ोर से हिल रहे होते हैं। हँसी के मारे। अम्मी और फुफ्फी भी हँस-हँसकर दोहरी हो जाती हैं।

कभी किसी तस्वीर को देखते हुए वे एकदम खामोश हो जाती हैं। दुपट्टे से मुँह तब भी ढाँप लेती हैं। उनके कन्धे तब भी हिल रहे होते हैं। पर हँसी से नहीं। रुलाई सो। फुफ्फी और अम्मी तब उनकी पीठ

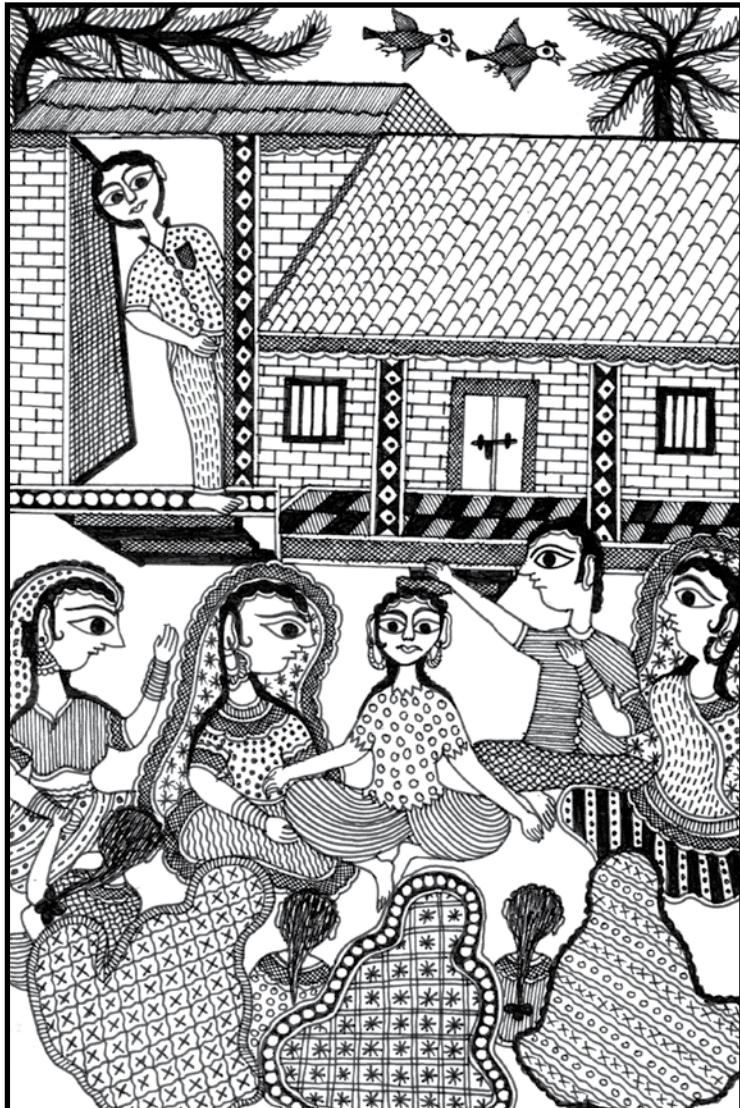
सहलाती रहती हैं। हँसी और रुलाई दोनों में ही दादीअम्मी की आँखें भीग जाती हैं...

उदासी के वक्त तीनों बिन बोले देर तक बैठी रहती हैं। पलंग पर एल्बमें खुली फैली रहती हैं। उनके पतले सफेद मोमी कागज हल्के-हल्के फड़फड़ाते रहते हैं। मुझे वह खामोशी बिलकुल अच्छी नहीं लगती। मैं जान रही होती हूँ कि तीनों उदास हैं। मैं पलंग पर कूदकर उन तीनों को चौंकाना चाहती हूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाती। डर लगता है। जैसे शोर मचाकर तोड़ने पर उदासी फूलदान की तरह टूट जाएगी। वह तो अच्छ न होगा... मैं भी उदास हो

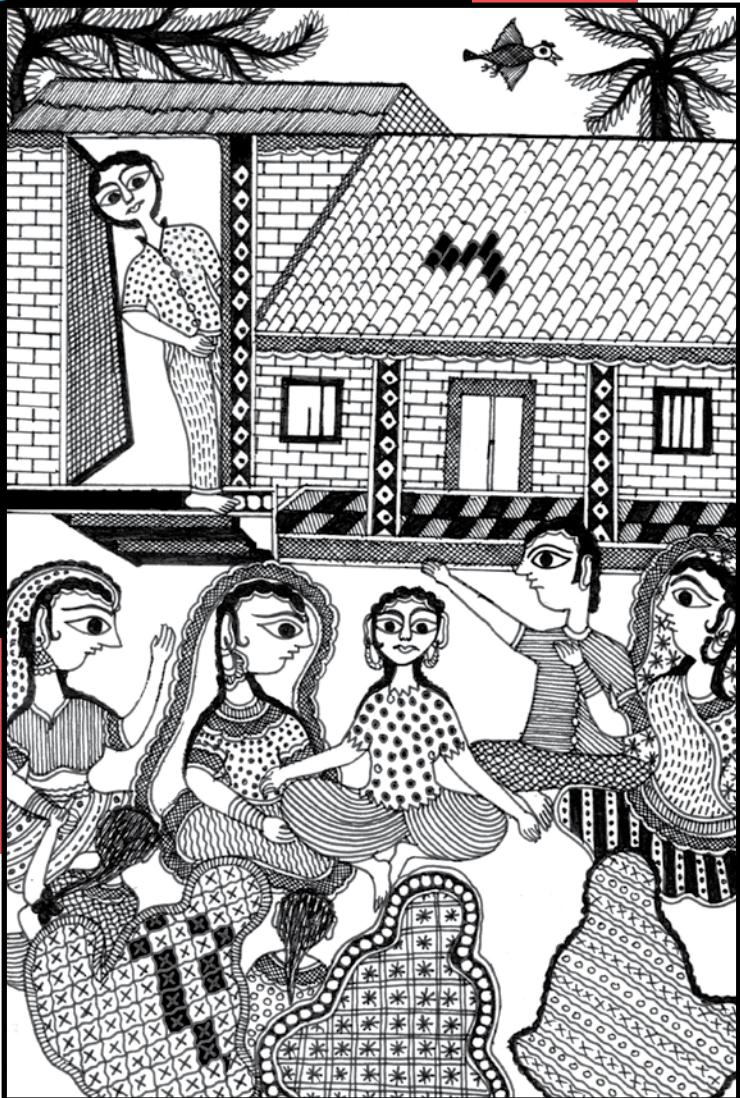
जाती हूँ। चुपचाप दादीअम्मी की गोद में सिर रखकर लेट जाती हूँ। दादीअम्मी दुपट्टे से अपनी आँखें और नाक पोंछती हैं। मेरा सिर प्यार से सहलाकर धीमे से मुस्कराती हैं। फिर आहिस्ता से कहती हैं, “अब्बी रानी बड़ी सयानी!” फुफ्फी और अम्मी भी मुस्कराती हैं। दोनों धीरे-धीरे एल्बमें बन्द करके वापस मेजपोश में बाँध देती हैं। दादीअम्मी उस गठरी पर हाथ फेरती हैं। मुलायमियत से। जैसे एल्बमों में बन्द पुराने वक्त पर से धूल पोंछ रही हों...

हर मोटे काले कागज से पहले एक पतला सफेद मोमी कागज है। जैसे तस्वीरें पर एक झीना परदा पड़ा है। मोमी कागज पलटते ही तस्वीरें साफ हो जाती हैं। उन एल्बमों में से एक अजीब गन्ध आती है। अम्मी कहती हैं, “यह पुराने वक्त की गन्ध है।”





अन्तर दूँढो अच्युत



एक जैसे दिखने वाले इन
दोनों चित्रों में 9 से ज्यादा
अन्तर हैं, तुमने कितने दूँढे?

चित्र: नरेश पासवान



पीयूष सेक्सरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

रहस्यमय बीज और चमगादड़ों की दावत



सुबह-सुबह की बात है। मैं बरामदे में बैठा कॉफी पी रहा था। तभी मेरा पड़ोसी नीरज अपनी मॉर्निंग वॉक पर निकला। वह अपने घर के आँगन में एक छोर से दूसरे छोर तक टहल रहा था। हमने एक-दूसरे को ज़ोर से गुड़-मॉर्निंग कहा। फिर वह अपनी सेर पर लौट गया, और मैं अपने खायालों में खो गया। तभी मैंने उसे धीरे से पुकारते हुए सुना, “पीयूष, इधर आओ। मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ।” शायद वह मुझसे कुछ रहस्य साझा करने वाला था!

मैं बाड़ तक गया। उसने चुपचाप मेरे हाथ में दो लम्बाकार बीज रखे। उनकी सतह पर हल्की चाँदी जैसी चमक थी और बीच में एक लम्बा खाँचा बना हुआ था। “तुम्हें क्या लगता है, ये क्या हैं?” उसने पूछा। मैंने बीजों को गौर से देखा। उन्हें मैंने पहले भी देखा था लेकिन कभी खुद से यह सवाल नहीं किया था। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, नीरज बोला, “तुम्हें पता है जामुन के पेड़ के नीचे मुझे ऐसे बहुत सारे

बीज मिलते हैं।” यह सुनकर मैं थोड़ा चौंकते हुए बोला, “जामुन के बीज ऐसे नहीं दिखते। ये जामुन नहीं हैं। और जामुन का मौसम तो कब का खतम हो चुका है।” नीरज मुस्कराया जैसे उसने अपने जाल में मुझे फँसा लिया हो। “मुझे पता है!” थोड़ा रुककर वह बोला, “लेकिन बड़ी तादाद में ये मेरे जामुन के पेड़ के नीचे मिलते हैं... ये क्या हो सकते हैं?” मैं कुछ कह पाता इससे पहले ही वह बेपरवाही से पीठ फेरते हुए अपनी सैर पर लौट गया।

अब मेरा दिमाग तेज़ी से चलने लगा। जामुन के पेड़ के नीचे किसी और पेड़ के बीज। मुझे दो जीवों पर शक हुआ। एक तो पक्षी और दूसरे फ्रूट बैट यानी फल खाने वाले चमगादड़। दोनों ही एक जगह से फल उठाकर दूसरी जगह पर ले जाकर शान्ति से उन्हें खाते हैं। लेकिन जो बात मुझे हैरान कर रही थी वो ये थी कि बीज एकदम साफ थे। फल का थोड़ा-सा भी हिस्सा उन पर लगा हुआ नहीं था। मेरा दिमाग फिर तेज़ी से दौड़ने लगा। अगर ये बड़े फल खाने वाले पक्षी हैं, तो हमारे बगीचे में कोयल, बसन्ता और स्लेटी धनेष तो हैं। लेकिन ऐसा होता तो ये बीज उनकी



बीट के साथ बाहर आ जाते क्योंकि वे पूरा फल निगल जाते हैं। और यदि ये छोटे पक्षी हैं – जैसे कि बुलबुल जो पके हुए फलों को चुगती हैं – तो गिरे हुए बीज पर फल के गूदे के अंश व चोंच के निशान दिखते। अब मेरे शक की सुई फिर से फल खाने वाले चमगादड़ों की ओर धूम गई। हो सकता है वे फल खाने के लिए जामुन के पेड़ को डाइनिंग टेबल सरीखे इस्तेमाल करते हों। लेकिन जितना मैं जानता हूँ चमगादड़ फलों को बेढब तरीके से खाते हैं। वे केवल फल के पके हुए हिस्सों को ही खाते हैं और बाकी फेंक देते हैं।

साफ समझ में आ रहा था कि रहस्यमयी बीजों वाला यह पेड़ हमारे मोहल्ले में आम तौर पर पाए जाने वाला कोई पेड़ है। थोड़ा और सोचने पर मुझे लगा कि मैंने ऐसे बीजों को अपने घर के सामने वाले आँगन में कई बार देखा है, लेकिन मैंने कभी इनका नाम जानने के बारे में सोचा नहीं। मैं अपने आँगन में गया और इन साफ, चाँदी जैसी सतह वाले बीजों को देखा। फिर मैंने कुछ बीजों को अपने हाथों में रखकर उनकी फोटो लीं ताकि उनके आकार का थोड़ा अन्दाज़ा लगे। और फिर ये फोटो मैंने फेसबुक पर पोस्ट कीं व इन्हें पहचानने में दोस्तों से मदद माँगी।

लगभग तुरन्त ही इनकी पहचान हो गई – ये पॉलीऐलथिआ लॉन्जिफोलिया यानी अशोक के पेड़ के बीज थे। हालाँकि यह असली अशोक का पेड़ नहीं है, लेकिन ज्यादातर लोग इस किस्म को इसी नाम से ही जानते हैं। यह हमारे बगीचों में पाए जाने वाला एक बहुत ही सामान्य पेड़ है।

आम तौर पर इसे बाउंझी की दीवार के साथ-साथ लगाया जाता है। यह पेड़ स्तम्भ की तरह सीधा बढ़ता है और काफी लम्बा हो जाता है। हमारे मोहल्ले में 40 फुट (लगभग 12 मीटर) ऊँचे अशोक के पेड़ हैं, हालाँकि मैंने इनसे भी ऊँचे अशोक के पेड़ देखे हैं।

अपने काम करने की टेबल से सटी खिड़की से मैं अपने पड़ोसी आशीष के बगीचे के अशोक के पेड़ देख सकता हूँ। पिछले एकाध महीने से शाम के 5 बजे के आसपास उन पेड़ों में कम से कम 3-4 फल खाने वाले चमगादड़ दिखाई देते। वे अजीब ढंग से एक डाली से दूसरी डाली पर जाते, छोटी-छोटी उड़ानें भरते और लौट आते, और फिर उड़ जाते। जैसा कि तुम्हें पता है चमगादड़ दिन में सोते हैं और शाम के समय सक्रिय हो जाते हैं। तो अब तक मैं यही सोच रहा था कि कुछ चमगादड़ों ने आशीष के अशोक के पेड़ों को अपना बसेरा बना लिया है, और शाम होते ही वे अपने रात की गतिविधियों के लिए तैयार हो जाते हैं। पर जब मैंने दूरबीन के ज़रिए ध्यान से देखा तो पता चला कि अशोक का वो पेड़ फल रहा था और चमगादड़ उन पके हुए फलों की दावत उड़ा रहे थे। और अपनी आदत के मुताबिक, बच्चों की तरह वे फलों को अपने पसन्दीदा डाइनिंग टेबल पर ले जाकर खा रहे थे।

अब इस पहेली की सारी कड़ियाँ ठीक से जुड़ रही थीं। फल खाने वाले चमगादड़ अशोक के पेड़ से पके फल तोड़ते। फिर कुछ 10-15 मीटर की दूरी पर मौजूद जामुन के पेड़ तक उड़ते और वहाँ आराम से फलों को खाते। इसी कारण जामुन के पेड़ के नीचे अशोक के फलों के बीज गिरे हुए थे। अशोक के पेड़ गर्मी से सर्दी

के पहले तक फलते हैं तो यह कड़ी भी ठीक बैठ रही थी कि नीरज को सितम्बर में जामुन के पेड़ के नीचे ये बीज मिले।

लेकिन एक कड़ी का जुड़ना अभी बाकी थी। मेरी यह धारणा कि चमगादड़ बेढब तरीके से खाते हैं, उन साफ बीजों से मेल नहीं खा रही थी। मैंने अपने दोस्तों से इसके बारे में पूछा तो पता चला कि ऐसा नहीं है कि चमगादड़ हमेशा बेढब तरीके से खाते हैं। अमूमन वे फल के पके हुए हिस्सों को ही खाना पसन्द करते हैं और बाकी हिस्सों को छोड़ देते हैं। अमरुद, चीकू और आम जैसे बड़े फलों के साथ ऐसा ही होता है। लेकिन अशोक के छोटे गूदेदार फलों के बीज वो चाट-चाटकर ऐसे साफ कर देते हैं, जैसे तुम अपने पसन्दीदा केक की चम्मच को चाटकर साफ करते हो!

और आज अपने-अपने बगीचों में मॉर्निंग वॉक के समय नीरज बड़े उत्साह से मेरे पास आया और बोला,

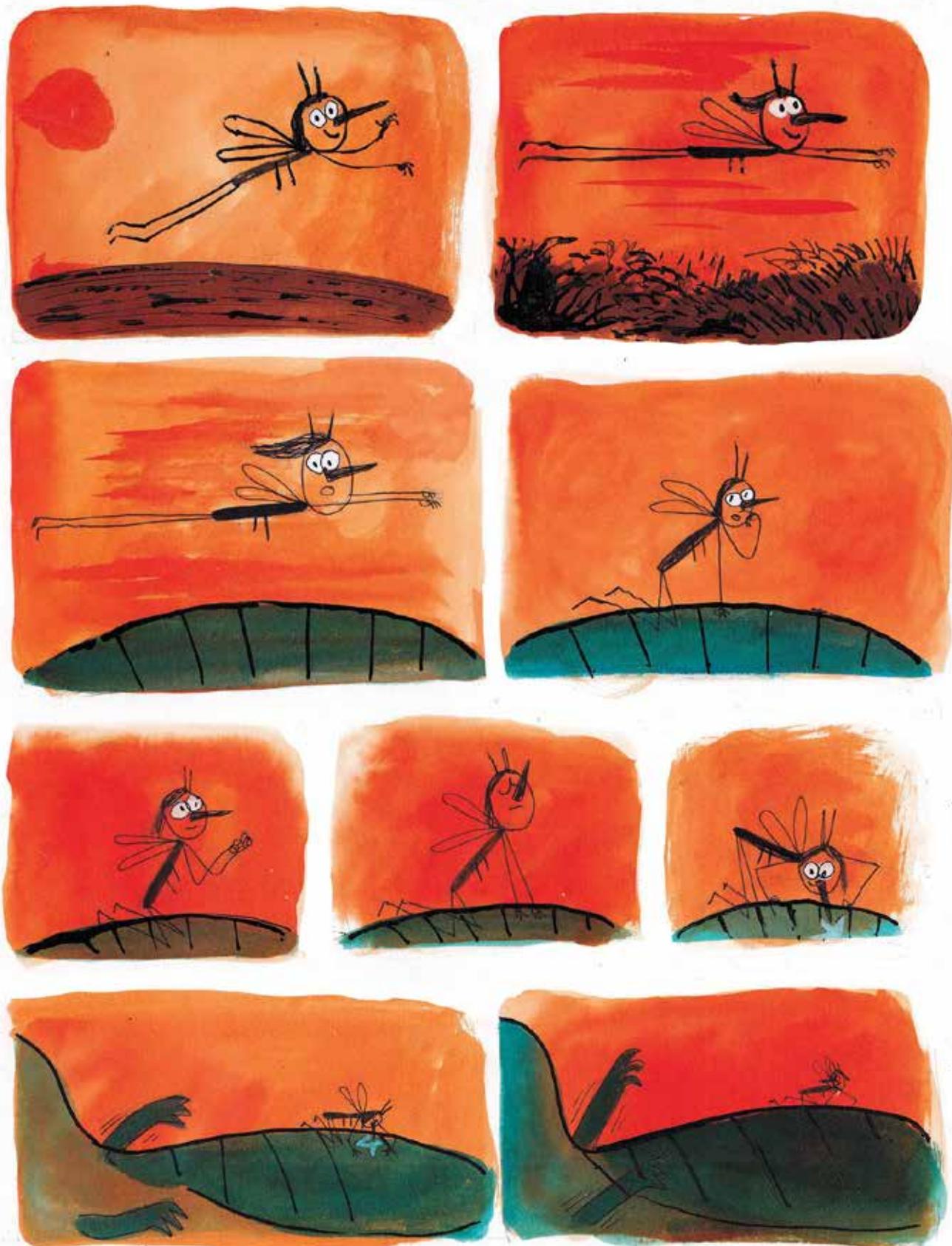
“पीयूष, मैंने गिना, जामुन के पेड़ के उस हिस्से के नीचे 26 छोटे पौधे उग आए हैं। ये जामुन जैसे नहीं लगते, आखिर ये हैं क्या?”

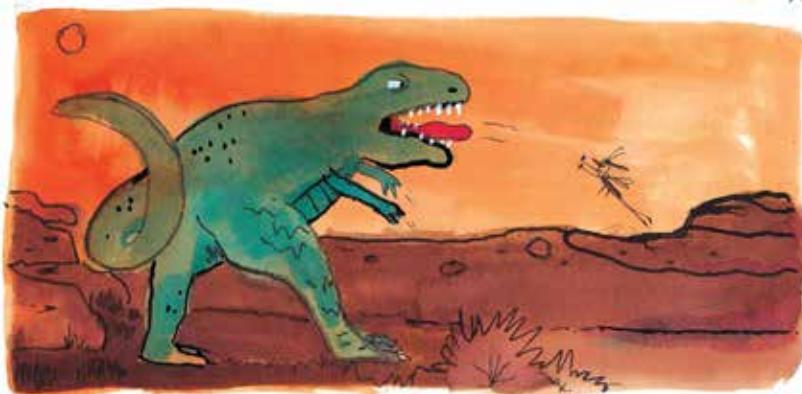
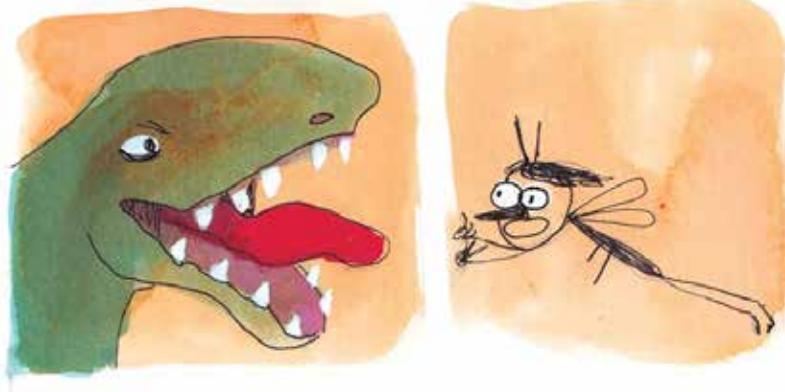
“पॉलीएलथिआ लॉन्जिफोलिया” कन्धे उचकाते हुए मैंने कहा। और इससे पहले कि नीरज एक भी शब्द बोल पाए, मुस्कराते हुए मैं वहाँ से चल दिया। अब उसे अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाने दो। वैसे तुम तो समझ ही गए होगे कि वो छोटे पौधे बीजों से अंकुरित होने वाले अशोक थे... और इसके लिए फल खाने वाले हमारे चमगादड़ दोस्तों का शुक्रिया अदा करना तो बनता है।



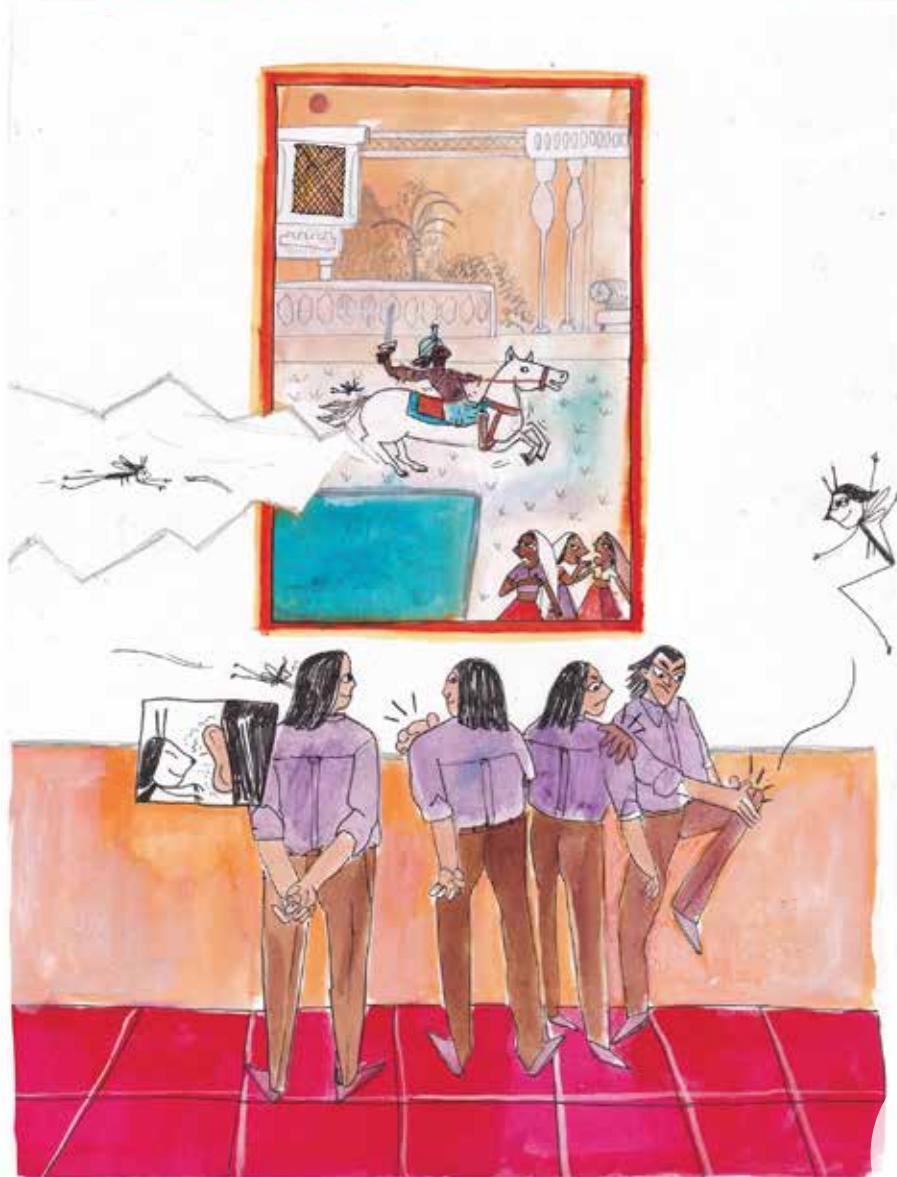
काटना

पार्वती सुब्रह्मण्यन्









ମୁଖ

ମୁକମକ

17

অক্টোবর 2025

बेसुरा राग

वीरिन्द्र दुबे

चित्र: मयूख घोष

वो बेसुरों का गाँव था। एक से बढ़कर एक बेसुरे वहाँ रहते थे। भोर से लेकर आधी रात तक सारे बेसुरे रियाज़ करते रहते थे।

एक बार गाँव में गवैयों की एक मण्डली आई। गाँववालों ने मिलकर उनकी बड़ी आवभगत की। और सभी ने एक-एक, दो-दो गवैयों को अपने घर पर ही ठहरा लिया।

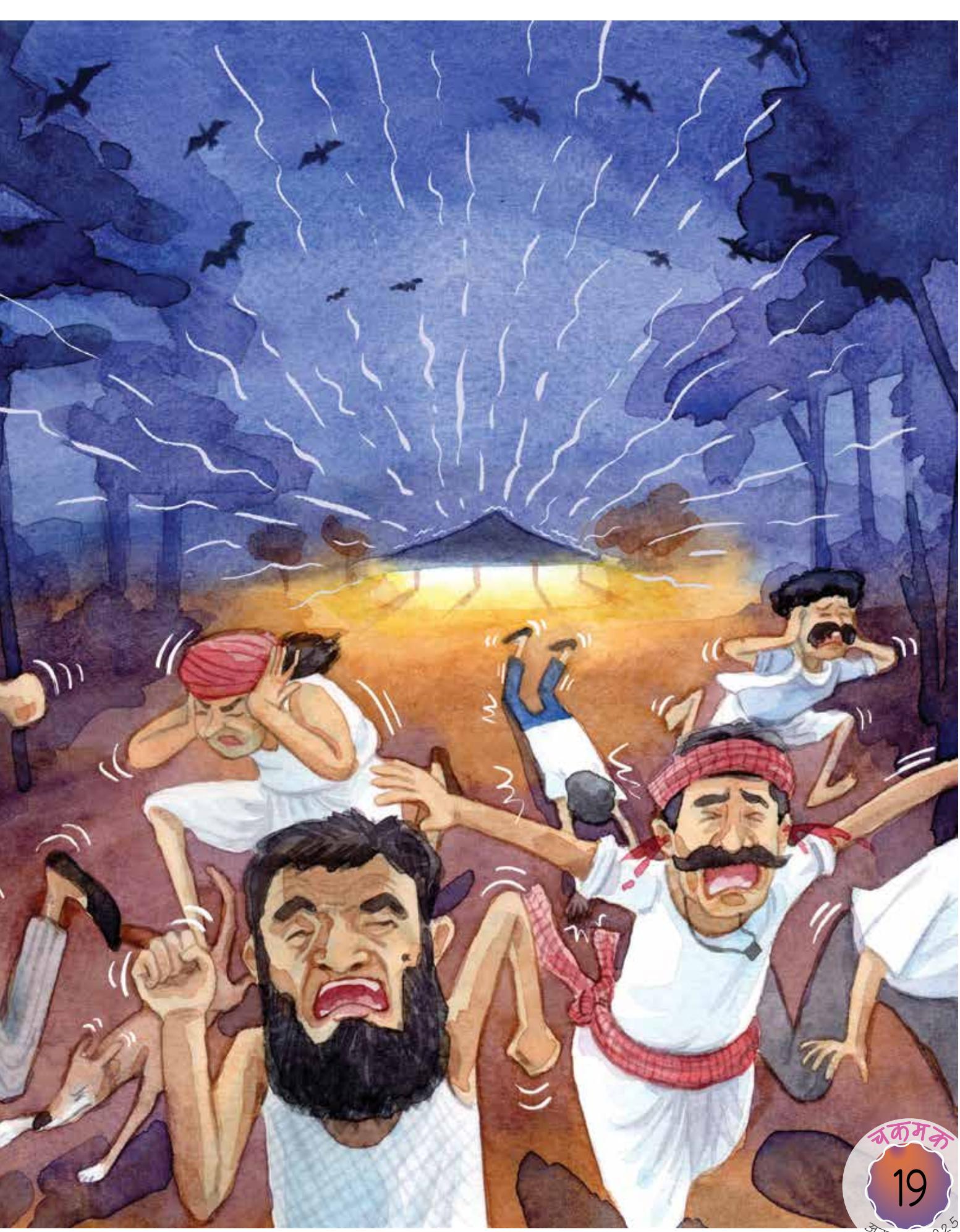
शाम होते-होते जहाँ-तहाँ दरियाँ बिछ गईं। ढोलक, तानपुरे, सारंगी, तबले, तम्बूरे, बाँसुरी, खँजरी, चमीटों की ठोका-पीटी शुरू हो गईं। गम्मत शुरू हुईं। अलाएं भरी जाने लगीं। बाजे बजने लगे। धीरे से तेज़, और तेज़, और तेज़। ऐसा शोर मचा कि गवैयों की मण्डली बोरिया-बिस्तर छोड़कर सिर पर पाँव रखकर भाग गईं। किसी ने भी पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं की।

पर बेसुरे अपने में ही मगन थे। “वाह-वाह! क्या बात है...” की आवाज़ें हर तरफ गूँज रही थीं।

सवेरे-सवेरे पुलिस की गाड़ी आई। तब पता चला कि वो गवैयों की मण्डली नहीं डाकुओं की गेंग थी, जो लूटपाट करने के इरादे से वहाँ आई थीं। और जाते-जाते इस तरफ धोखे से भी नहीं फटकने की कसम खाकर गई है।



यह कहानी बतखोरु और अन्य कहानियाँ किताब से ली गई है। हाल ही में इस किताब को चिल्डन बुक क्रिएटर अवॉर्ड्स 2025 में 'बंग इलस्ट्रेटर' श्रेणी में रनर-अप चुना गया है। इस किताब को खरीदने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।



क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:
कुछ लोग नींद में बोलते हैं। लगभग सभी
लोग कभी ना कभी ऐसा करते हैं। क्या
तुमने किसी को नींद में बात करते हुए
सुना है? क्या सुना है? तुम्हें क्या लगता है
कि लोग नींद में क्यों बोलते हैं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:
क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पर लम्बे समय तक इन्तज़ार करना पड़ा है? इस दौरान तुमने क्या-क्या देखा? क्या अच्छा लगा और क्या बुरा, और क्यों?

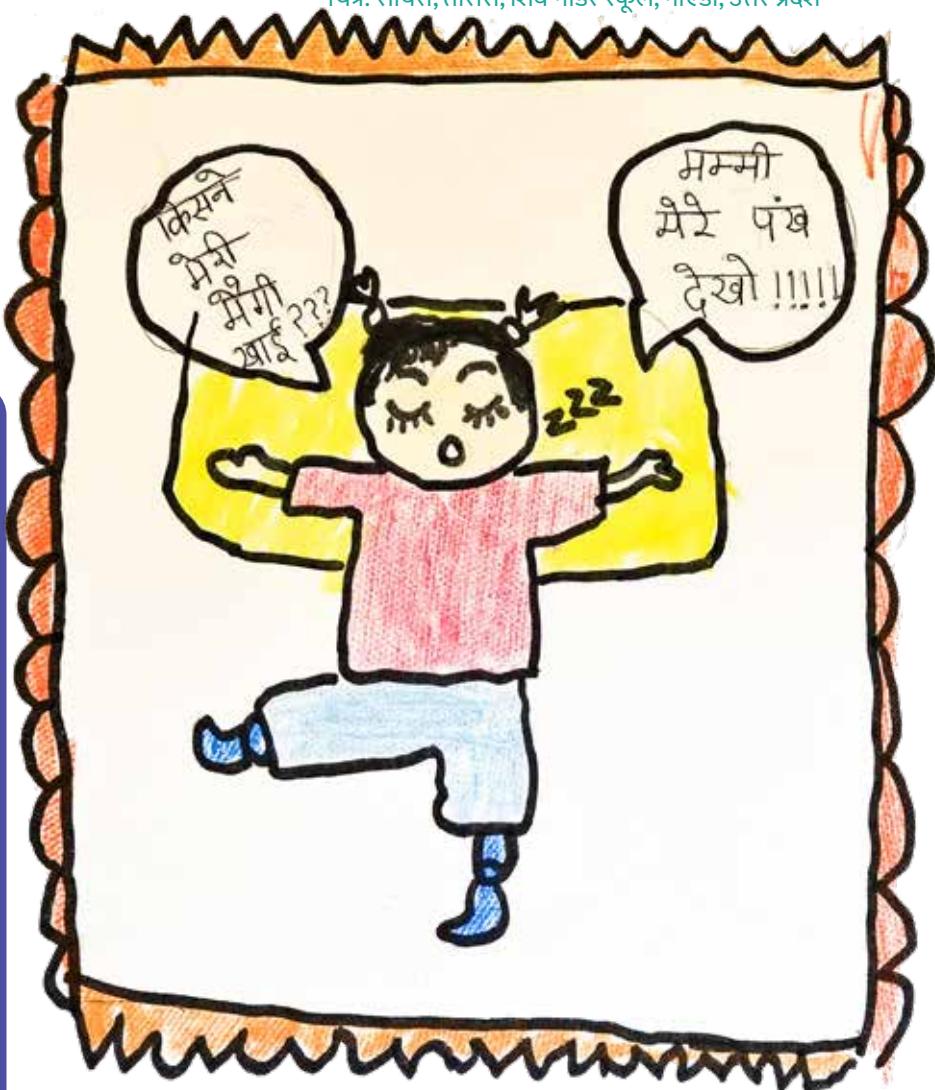
तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हों।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर इमेल
कर सकते हो या फिर 9753011077 पर डॉटसऐप
भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते
हो। हमारा पता है:

ચક્રમંક

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्टरी के पास,
भोपाल - 462026. मध्य प्रदेश

चित्र: सायरा, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



साकेत रंजन आठवीं क्लिकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

मैंने अपने एक रिश्तेदार को नींद में बोलते हुए सुना है। वे नींद में अक्सर बोलते हैं कि रेस्टोरेंट चलो! स्कूल जाओ। मेरे ख्याल से लोग नींद में इसलिए बोलते हैं, क्योंकि हमारी चेतना पूरी तरह बन्द नहीं होती। दिन भर की बातें और यादें हमारे दिमाग में घूमती रहती हैं। कभी-कभी ये अधूरी सोच या भावनाएँ नींद में शब्दों का रूप ले लेती हैं। शायद यह हमारी आत्मा का तरीका होता है, जो बिना रोके अपने मन की बात कह देती है। यह एक रहस्यमयी प्रक्रिया है, जो हमें यह बताती है कि दिमाग कभी परी तरह से सोता नहीं।

साजिया, निरन्तर संस्था, पाटका सेंटर, दिल्ली

मैंने अपने भाई को नींद में बोलते हुए देखा है। जब वह खेलकर आता है तो खेल ही उसके दिमाग में घुसा रहता है। और सोते समय वह खेल-खेल करता रहता है। जैसे नींद में वह कंचे खेलता है तो कहता है कि यह कंची मेरी है। और अबकी बाज़ी मेरी है। नींद ना पूरी होने के कारण मेरे पापा भी सोते समय बड़बड़ते हैं। मेरे पापा गार्ड हैं जो रात की ड्यूटी करते हैं। तनाव, थकान व चिन्ता के कारण भी वह बड़बड़ते हैं।

कट्टा आशा मीनल, नौवीं, जेआरके ग्लोबल सीनियर सेकेंडरी
स्कूल, कट्टानकुलथुर, तमिलनाडु

मैं खुद नींद में बात करती हूँ। हो सकता है आपको यह अजीब लगे। या आप सोचें कि मैं पागल हो गई हूँ या कुछ और। लेकिन हाँ, आधी आबादी तो नींद में ही बात करती है। मैं कभी-कभी नींद में अपने बैंड के वाद्य यंत्र के बारे में बात करती हूँ। फिर कुछ खेल तकनीकों के बारे में जो मैं इस्तेमाल कर सकती हूँ, कुछ गाने जो मुझे सुनना बहुत पसन्द हैं। और मैं ऐसे बात करती हूँ जैसे मैं किसी कॉन्फ्रेंस हॉल में हूँ। हाँ, मुझे पता है कि यह बहुत अजीब है, और सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे दादा-दादी को लगता है कि मेरे अन्दर कोई शैतान है। उन्होंने मेरे माता-पिता से इसकी शिकायत की। पहले तो उन्हें यह डरावना लगा और लगा कि मुझ में कोई भूत-प्रेत है, लेकिन बाद में उन्हें इसकी आदत हो गई। हो सकता है कि ऐसा इसलिए हो कि आपका दिन बहुत व्यस्त रहा और अभी भी काम बाकी हैं। और इस वजह से आपको अगले दिन की गतिविधि बनाना हो।

रोशन, दूसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा दोस्त भोला नींद में कहता है, “पतंग कट गई। पकड़ो-पकड़ो।” वह इसलिए बोलता है क्योंकि वह दिन भर पतंग उड़ाता है।

रुबीना यादव, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,

जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

हाँ, मैंने कुछ लोगों को नींद में बोलते हुए देखा है क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि शायद अभी दिन है और वह जाग रहे हैं और जिससे वह बोलते हैं तो उन्हें लगता है कि वह हमारे सामने है।

प्रभा साहू, ग्यारहवीं, अंजीम प्रेमजी स्कूल,
धमतरी, छत्तीसगढ़

मैंने अपने पापा को नींद में बातें करते सुना है। वो नींद में कह रहे थे कि अभी बारिश हो रही है और कल सुबह दवा डालनी है खेतों में। कैसे डालेंगे? अगर बारिश रुक जाएगी तो खेतों में दवाई डाल देंगे। मेरी मम्मी बता रही थीं कि एक दिन तू जल्दी सो गई थीं। मैं तुझे खाना खिलाने के लिए उठाने गई तो तू नींद में गुस्से से बोली, “मैं नहीं खाऊँगी। आपने मेरा सामान किसी और को दे दिया।” लोग दिन-रात काम करते हैं। इससे उनके शरीर में थकान और चिन्ता होती है। थकान और चिन्ता के कारण लोग नींद में बात करते हैं।

चित्र: वीर आदित्य खोंसला, आठ साल, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



पलक थवाईंत, सातवीं, रायपुर, छत्तीसगढ़

नींद में बोलना एक अजीब किन्तु रोचक घटना है। जब हम सोते हैं तो प्रायः सपनों की दुनिया में खो जाते हैं। कभी-कभी हम सपने देखते हुए उनमें इतने तल्लीन हो जाते हैं कि अनजाने में नींद में बोलने लगते हैं। प्रायः हमें इसकी जानकारी तब होती है, जब सुबह उठने पर हमारे आसपास के लोग हमें बताते हैं कि हम नींद में कछ बोल रहे थे।

कई बार सपनों के प्रभाव से हमारे मन में चल रहे विचार नींद में शब्दों के रूप में प्रकट हो जाते हैं। यह हमारी आन्तरिक भावनाओं और चिन्तन का ही प्रतिविम्ब होता है। मैंने स्वयं अपनी बहन को नींद में बोलते हुए सुना है।

वह सपने में किसी से कुछ कह रही थी। इससे लगता है कि नींद में बोलना कोई असामान्य नहीं, बल्कि एक सामान्य प्रक्रिया है।

अक्सर जब हम किसी व्यक्ति के बारे में सोचते हैं या किसी विशेष घटना के बारे में विचार करते हैं, तो उसका असर हमारे सपनों में दिखाई देता है। ऐसे में कई बार हम नींद में बातें करने लगते हैं।

इस प्रकार नींद में बोलना हमारे अवचेतन मन की गतिविधियों का परिणाम है। यह हमारे मन के विचारों और सपनों को समझने का एक माध्यम भी है।

दीपेन्द्र कुमार, नौवीं, स्वतंत्र तालीम,
मलसराय सेंटर, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं सपना देख रहा था कि मैं स्कूल गया हूँ। और लंच में सभी बच्चे खो-खो खेलने का प्लान बना रहे थे। तो सभी बच्चों ने दो टीमें बना लीं। हमने कहा कि पहले तुम बैठो और मेरी वाली टीम के बच्चों को पकड़ो। जब मेरी टीम वाले सारे आउट हो गए तो दूसरी टीम वाले बैठे। तब हमने एक बच्चे को पैर लगाकर गिरा दिया। फिर मेरा सपना टूट गया और मैं हँसने लग गया। तो मम्मी ने बहुत तेज़ चपाटा मारा और बोलीं, “क्यों हँस रहे हो?” मैंने कहा, “मैं कहाँ हँस रहा हूँ” और मैं फिर से सो गया। यही होता है कि कुछ लोग सपने के चक्कर में नींद में बोलते हैं या फिर जो दिन में करते हैं वही दिमाग में रहता है।

गगन मेरावी आठवीं, चकमक क्लब, बुदरा, बीजाडाण्डी,
मण्डला, मध्य प्रदेश

मैंने किसी को नींद में बोलते नहीं सुना। मेरे हिसाब से जो लोग ज्यादा बोलते हैं उन्हें ज्यादा बोलने की आदत हो जाती है। जिससे वो लोग रात में सोते समय भी बोलने लगते हैं।

तानिया, तीसरी, अङ्गीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड

मुझे लगता है कि नींद में लोग इसलिए बोलते हैं क्योंकि उनको लगता है कि वह कोई खेल खेल रहे हैं। इसलिए वह खुद उस सपने में हैं, और इसलिए वह बोलते हैं। मैंने अपने भाई को सपने में बोलते हुए सुना है।

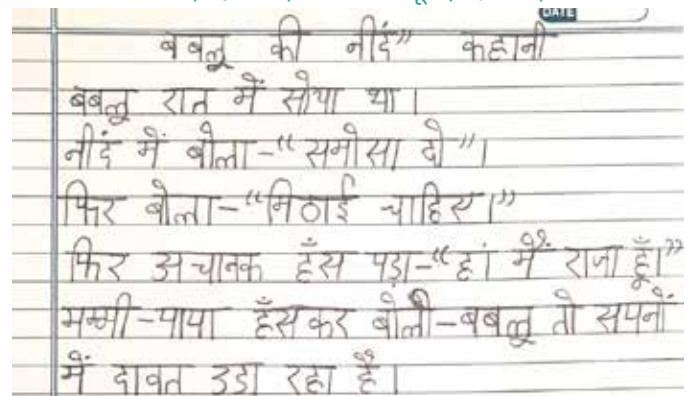
प्रीति पटेल, छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, लच्छनपुर,
बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

मैंने अपने दादाजी को नींद में बात करते सुना था। वो नींद में अपनी मीठी वाणी में राम राम, जय सीता राम बोल रहे थे। मुझे लगता है कि मेरे दादाजी ने टीवी वगैरह में रामायण देखी होगी। इसीलिए मेरे दादाजी ऐसा बोल रहे थे।

खुशबू यादव, आठवीं, एकलव्य फाउंडेशन, टेमिल सेंटर, मरोड़ा,
नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हाँ, मैंने मेरी बहन को नींद में बात करते देखा है। मेरी बहन कह रही थी, “आओ, आओ, खिचड़ी खा लो। खिचड़ी खा लो।” और वो हाथों को इधर-उधर नचा रही थी। सुबह यह बात हमने सबको बताई तो सब हँसने लगे। लोग नींद में इसलिए बड़बड़ते हैं कि शायद उनको कुछ चाहिए होता है।

चित्रः आर्यन वर्मा, पहली 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश



चित्र पहेली



दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

सुडोकू 89

2		9			3		
6	7	8				2	
5				7	6		8
	6	1	7		2	3	
4	5		3				
3							8
7	8	5		2		1	3
2		8		7		4	9
4	3	1		5	8		



भाग - 16

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेश्व राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या
मुडप्पा, अनीता वर्गास और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्बेकर

जलगोभी

वैज्ञानिक नाम: *पिस्तिआ स्ट्रैटिओइटिस्* (*Pistia stratiotes*)

मूल: उष्णकटिबन्धीय

अमेरिका

कैसे पहुँचा: पता नहीं कि इसे भारत में कब और क्यों लाया गया। माना जाता है कि यह अनजाने में यहाँ पहुँची था फिर बतौर सजावटी पौधा लाई गई।

जलगोभी एक बारहमासी तैरने वाला पौधा है। इसके हल्के हरे रंग के पत्ते गोल आकार में ऐसे व्यवस्थित होते हैं जैसे गुलाब की पंखुड़ियाँ। इसके पत्ते 25 सेंटीमीटर तक चौड़े हो सकते हैं। इस पौधे में पानी की सतह के साथ आड़े स्टोलन यानी कि आड़े तने होते हैं, जिनसे कुछ-कुछ दूरी पर जड़ें निकलती हैं और एक नया पौधा उगता है। ये स्टोलन पानी के नीचे रेशेदार जड़ें पैदा करते हैं।

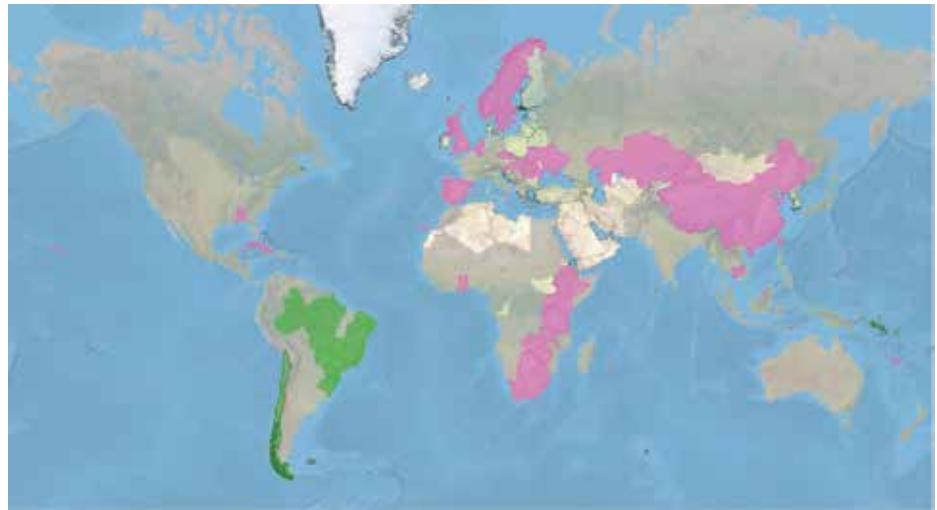
जलगोभी के फूल गर्भी में खिलते हैं। इसमें फल बारिश के बाद लगते हैं। थालीनुमा बिछे पत्तों के तल पर फूल पाए जाते हैं जिनके गुच्छों पर एक सफेद स्पैथ यानी संशोधित पत्ता (ब्रैकट) होता है। यह गिलाफ का काम करता है। कई बीजों से भरे इसके फल अण्डाकार होते हैं।



असर

जलगोभी बहुत तेज़ी से फैलती है और पानी की गुणवत्ता को नुकसान पहुँचाती है। यह पानी में धूली हुई ऑक्सीजन को कम कर देती है और पोषक तत्वों के चक्र को बिगाड़ देती है। इसकी वजह से पक्षियों और मछलियों के लिए खाने की कमी हो जाती है। यह धान की फसल को नुकसान पहुँचाती है। साथ ही यह रोग पैदा करने वाले परजीवियों के वाहक मच्छरों को पनपने की जगह भी देती है। जलगोभी जलीय प्राकृतवासों (habitat) की संरचना को बदल देती है। इससे नाव चलाने में दिक्कत होती है और पर्यटन व मनोरंजन की दृष्टि से जलाशयों का महत्व कम हो जाता है।

हालाँकि जलगोभी कुछ तरह से उपयोगी भी है। यह क्रोमियम और कोबॉल्ट जैसी भारी धातुओं से प्रदूषित जलाशयों को साफ करने में कारगर होती है। और इसकी राख जैवउर्वरक के रूप में काम आती है। औषधीय अध्ययनों से पता चला है कि इस पौधे में सूक्ष्मजीवरोधी (antimicrobial) और कवकरोधी (antifungal) गुण होते हैं।



प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जगह दर्ज नहीं

*हालाँकि CABI (2023) से प्राप्त उपरोक्त नक्शे में दिखाया नहीं गया है, पर प्रायद्वीपीय भारत में जलगोभी को एक आक्रामक एलियन पौधे के तौर पर जाना जाता है।

बन्दोबस्त

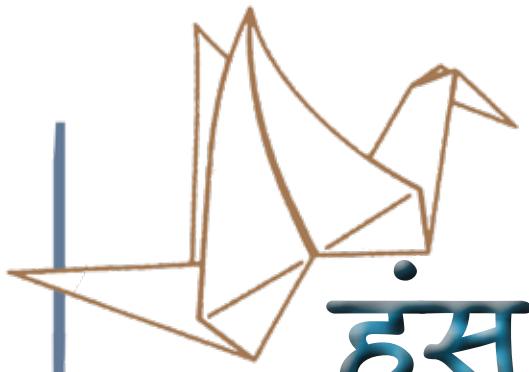
तेज़ी-से फैलने के कारण जलगोभी को मशीनों (मैकेनिकल) से हटाना कारगर नहीं होता। इसका सबसे असरदार तरीका जैविक नियंत्रण है। उदाहरण के लिए, दक्षिण अफ्रीका में इसके नियंत्रण के लिए नियोहाइड्रोनोमस् ऐफिनिस् कीड़े का इस्तेमाल होता है। हालाँकि, जैविक नियंत्रण के ऐसे घटकों का इस्तेमाल जो खुद विदेशी किस्म के हों अपने आप में नई दिक्कतें पैदा कर सकता है — खासकर अगर ये घटक आक्रामक बन जाएँ या अन्य स्थानीय पौधों और जानवरों को नुकसान पहुँचाने लगें।



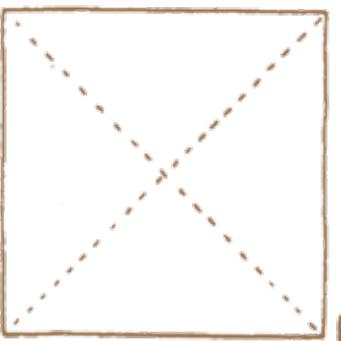
कृकम क

27

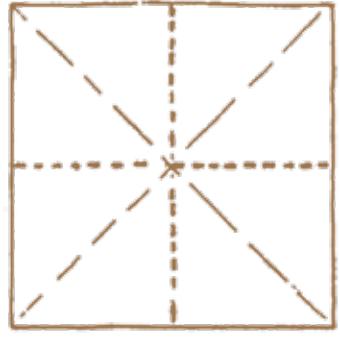
अक्टूबर 2025



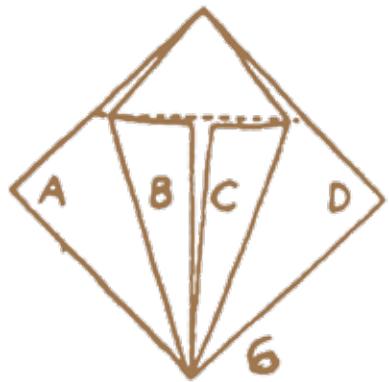
हंस तुम्ही आ बनाओ



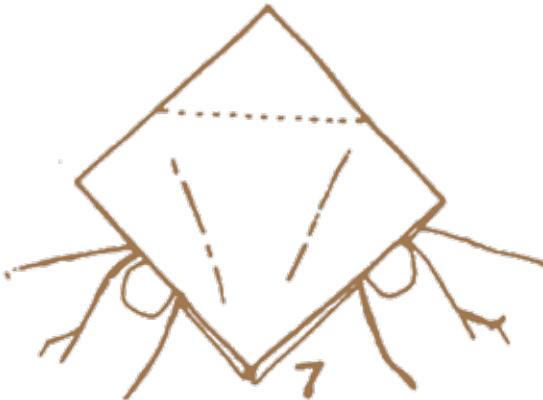
1. एक चौकोर काग़ज को दोनों तिरछी रेखाओं पर मोड़ो।



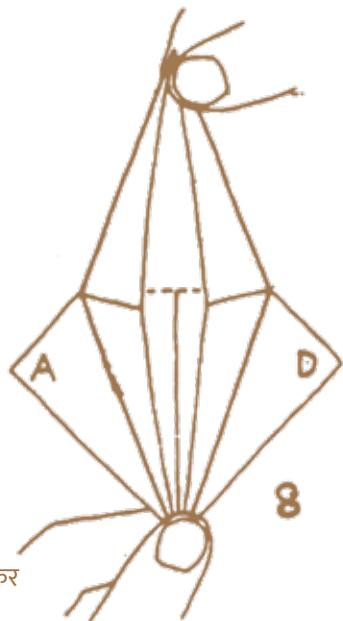
2. काग़ज को पलटो। अब आमने-सामने के सिरों को मोड़ो।



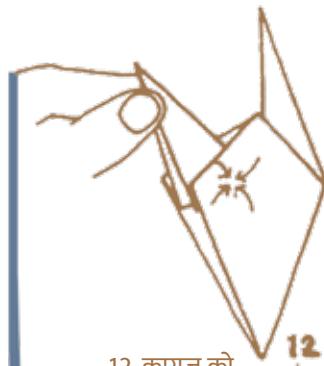
6. ऊपर के त्रिकोण को टूटी रेखा से नीचे की ओर मोड़ो और वापस ऊपर उठा दो। B और C को भी सिरों तक खोल दो।



7. ऊपर की तह को टूटी रेखा तक उठाओ।



8. अब निचले हिस्से को जितना हो सके ऊपर खींचो। दोनों सिरे अब आसपास आकर मिल जाएँगे।



12. काग़ज को मोड़कर इस स्थिति को पक्का करो।
13. अब दूसरे कान



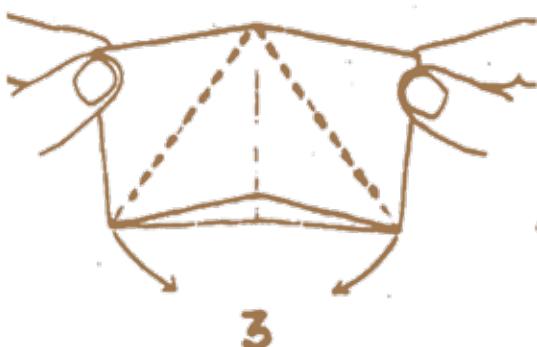
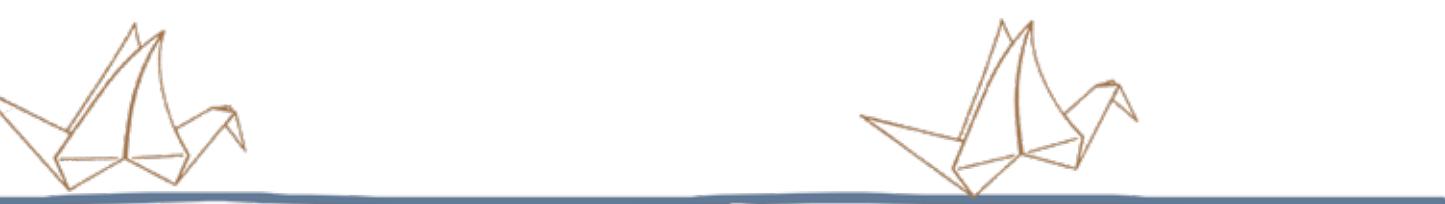
को दाईं ओर खींचो। काग़ज को दुबारा मोड़कर इस स्थिति को पक्का करो।



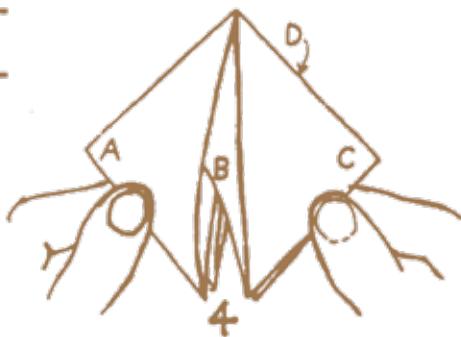
14. एक पंख को ऊपर की ओर मोड़ो। पलटकर दूसरा पंख भी मोड़ो।



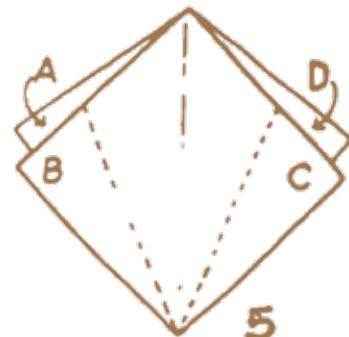
15. चोंच को अपने अँगूठे और उँगली की मदद से मोड़ो।



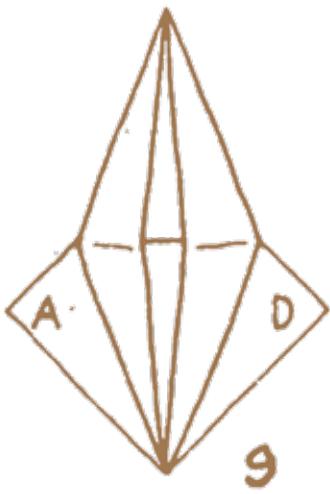
3. कागज को आधा मुड़ा रहने दो। मुड़े हुए सिरे के दोनों कानों को उँगलियों और अँगूठों के बीच पकड़ो।



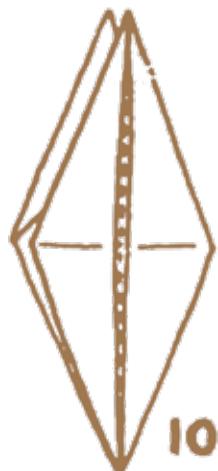
4. सिरों को इस तरह नीचे लाओ जिससे कागज के कोने एक साथ आएँ और कान A, B, C और D बनाएँ।



5. कान B को बाईं ओर, कान D को दाईं ओर मोड़ो। B और C कान के निचले सिरों को खड़ी मध्य रेखा तक मोड़ो।



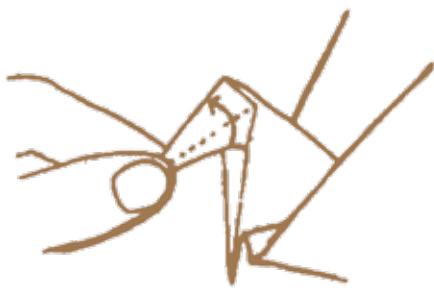
9. मोड़ों को अच्छी तरह जमकर दबाओ।



10. कागज को पलट लो। अब 5 से 8 के चरणों को A और D कोनों के साथ भी दोहराओ।



11. ऊपरी बाएँ कान को दाईं ओर मोड़ो। अब कागज पलटकर दोबारा यही क्रिया दोहराओ। ऊपर की ओर दो सँकरे कान होंगे। एक को बाईं ओर खींचो।



16. खींच का कोण पक्का करो।



17. अब तुम्हारा हंस लगभग बन चुका है। पंखों को उँगली और अँगूठे से थोड़ी गोलाई दो।



18. अब गर्दन का निचला हिस्सा एक हाथ से पकड़ो और दूसरे हाथ से पूँछ को बार-बार खींचो। हंस अपने पंख फड़फड़ाएगा।



मोहम्मद यासिर
चित्र: शुभम लखेरा

जिंदगी का सफर.



ई-रिक्षा चलाने वाले एक आदमी की कुछ लड़कों से बहस हो रही थी। गौर से देखा तो वो जानी-पहचानी शक्ल इजाज़ भाई की थी। मुझे वे बेहद खुशमिजाज व्यक्ति के तौर पर याद थे। पर आज वे कुछ लाचार-से लगे।

बॉम्बे पिक्चर के हीरो अरविन्द स्वामी को अगर एक फुट छोटा कर दो, तो इजाज़ भाई और अरविन्द सगे भाई लगते। उनकी किराने की दुकान बहुत चलती थी। उनके हाथों में बला की फुर्ती थी। एक हाथ से पान के पत्ते रोल करते और दूसरे हाथ से सरौती से सुपारी काटते रहते। इसी बीच फटाफट चायपत्ती या दाल आदि भी तौल देते। 50 ग्राम चने को कागज़ में लपेटकर पुड़िया बना देना उनके बाएँ हाथ का खेल था। अपने दिमागी कैलकुलेटर से पल भर में हिसाब बता देना

और नोट के फटे होने को दूर से ही भाँप लेना – उनकी इन सब खूबियों में कायल था।

जब मैं 13-14 साल का हुआ, तो उनकी दुकान पर उनका बेटा बैठने लगा। क्रिकेट और बाइक चलाने के चक्कर में मैंने अपनी उम्र से कुछ बड़े लड़कों से दोस्ती कर ली थी। एक बार उनमें से एक ने मुझसे जर्दे वाला गुटखा लाने के लिए कहा। मैं इजाज़ भाई की दुकान पर गया। और उनके बेटे से “2 वाला गुटखा” माँगा। उसने चुपचाप दे दिया। लेकिन इजाज़ भाई ने देख लिया। वे बोले, “यासिर, तुम कब से ये खाने लगे?”

मैं घबराकर बोला, “नहीं, ये तो राजू भाई ने मँगवाया है।”

इजाज़ भाई बोले, “तुम पढ़ने-लिखनेवाले लड़के हो, ऐसे लोगों के साथ मत रहा करो।”

“पढ़ने-लिखनेवाला” सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। क्योंकि हमारे घर में तो बस वही पढ़ने-लिखनेवाला कहलाता था जो क्लास में रेंक लाता था। बाकी सब बेकार। उनकी बात पर गौर कर मैंने राजू भाई से दूरी बना ली।

कुछ ही सालों में इजाज़ भाई का बेटा दुकान में रमने लगा। दुकान में अब कोल्ड ड्रिंक वगैरह भी मिलने लगीं। मैं भी पहले कॉलेज और फिर नौकरी में व्यस्त हो गया। काम के सिलसिले में मैं ज्यादातर बाहर ही रहता। कभी मोहल्ले जाता तो दोस्तों के साथ घूमने-खाने में ही वक्त गुज़र जाता।

इस बीच मैंने गौर किया कि इजाज़ भाई की दुकान अक्सर बन्द रहने लगी थी। एक दिन मैंने दोस्तों से पूछा, “क्या बात है? इजाज़ भाई क्या मॉल-वॉल में शिफ्ट हो गए?”

तब एक दोस्त ने बताया कि उनका बेटा दोस्तों के साथ डैम पर गया था। पानी में मर्स्ती करते-करते वो गहराई में चला गया और डूब गया। उसके इन्तकाल के बाद इजाज़ भाई का दुकान में दिल ही नहीं लगता था। इसलिए दुकान अब अक्सर बन्द ही रहती है।

लगभग 10 साल बाद आज मैंने उन्हें देखा। डरते-डरते मैं उनके पास गया और बोला, “बचपन में आप मेरे फेवरेट थे। एक बार आपने मुझे बुरी संगत से बचाया था।” फिर मैंने हिम्मत करके उनके बेटे का जिक्र किया। उनका चेहरा आज भी खुशमिजाज़ था। लेकिन बेटे की बात करते ही उनकी आँखों में नमी आ गई। उनके दर्द का एहसास मुझे भी था।

उन्होंने कहा, “इस 26 जनवरी को 10 साल हो जाएँगे उसे गए हुए।” इतना कहते ही उनकी आँखें भीग गईं। सड़क पर बहुत ट्रैफिक था, लेकिन ऐसा लगा जैसे सब थम गया हो। थोड़ी देर की खामोशी के बाद मैंने उनके कन्धे पे हाथ रखा और पूछा, “दुकान क्यों बन्द कर दी?”

वे बोले, “दुकान में बेटे की बहुत याद आती थी। उसके होने से बहुत सहारा था। चाहे दोस्तों के साथ कहीं भी घूमने जाए, रात में सारी दुकान वो 5-10 मिनट में अन्दर कर देता था। और मैं सिर्फ हिसाब-किताब करता था। दुकान में उसका बैठना, उधारी करने पर मुझे डॉटना, नई-नई चीज़ें लाने की ज़िद करना, रात में दोस्तों को दुकान पर बुलाने का उसका शौक – सब बहुत याद आता था। इसलिए दुकान बन्द कर दी। अब तो उस तरफ जाता भी नहीं हूँ मैं।”

थोड़ा ठहरकर इजाज़ भाई फिर बोले, “तुमने ये पूछा, अच्छा लगा। बहुत शुक्रिया।” फिर हम गले मिले। यही एक तसल्ली थी जो मैं उन्हें दे सकता था।

कुछ देर बाद एक सवारी ने उनसे पूछा, “बस स्टैंड चलोगे?” इजाज़ भाई राजी हो गए और चल दिए। आखिरी बार जब उन्होंने मेरी तरफ देखा, तो उनके चेहरे पर एक ठहराव था, जो मैंने पहले नहीं देखा था।

मैं सोच में पड़ गया – ना जाने कितने छोटे-बड़े व्यापारी जब अपनी दुकानें बन्द करते होंगे, तो उनकी भी कोई कहानी होती होगी... शायद किसी घाटे की, या बड़ी उधारी की... या फिर किसी की यादों की...

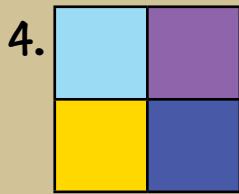
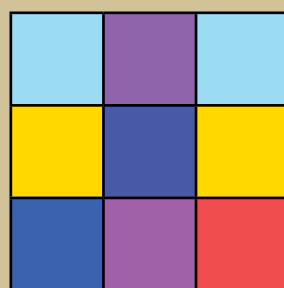
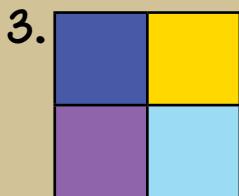
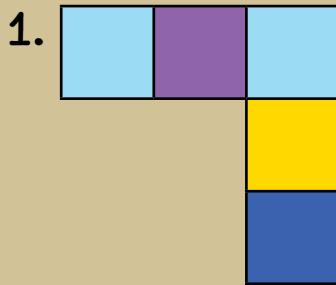




1. पैटर्न को समझकर बताओ कि प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

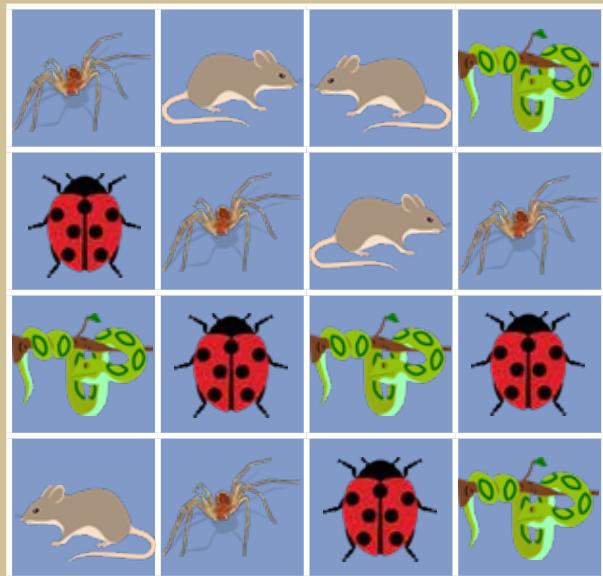
3	2	=	7
5	4	=	23
7	6	=	47
9	8	=	79
10	9	=	?

5. कौन-से दो टुकड़ों को जोड़कर नीचे दिया गया बड़ा वर्ग बनाया जा सकता है?



6. दी गई ग्रिड में कई सारे खेलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

2. इस चित्र को चार बराबर हिस्सों में इस तरह बाँटो कि हर भाग में एक मकड़ी, एक चूहा, एक साँप और एक लेडीबग हो।



3. एक हवाई जहाज को दिल्ली से उदयपुर जाने में 1 घण्टे 30 मिनट का समय लगता है। पर लौटने में उसे सिर्फ 90 मिनट लगते हैं। ऐसा क्यों?

4. जसमीत इंटरव्यू के लिए गई तो इंटरव्यू लेने वाले व्यक्ति ने उसे कहा कि ब्लैक मार्कर उठाकर व्हाइट बोर्ड पर कुछ लिखो। बताओ उसने क्या लिखा होगा?

साँ	मा	कं	आँ	जा	ली	नी	ती	फु
की	प	चे	गी	ख	श	त	रं	ज
कु	श्ती	सी	रा	लू	मि	गो	दा	डे
खो	खो	बै	ढी	तै	को	चौ	ज़ी	ढ
कै	र	म	ड	की	रा	हॉ	ली	लु
प	स्सा	लं	प	मि	फु	की	ता	का
क	क	ग	क्रि	के	ट	टे	श	छि
लू	शी	डी	वॉ	ली	बॉ	न	नि	पी
डो	बा	स्के	ट	बॉ	ल	दी	वा	स

काथा चक्की



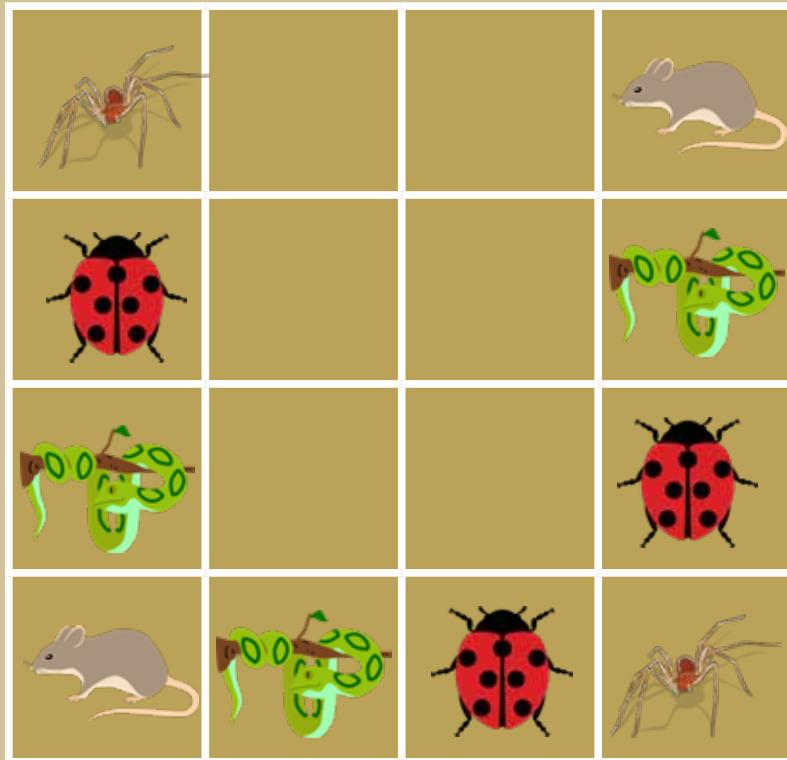
7. इस घड़ी को छह भागों में
इस तरह बाँटो कि हरेक
भाग का जोड़ समान हो।

8.

प्रश्न वाली
जगह में
कौन-सी
संख्या
आएगी?

5
3
2
1
?

9. दी गई शिर्ड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग जानवर आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से जानवर आएँगे?



फटाफट बताओ

क्या है जिसे माप तो
सकते हैं, पर देख नहीं
सकते?

(प्रमाण)

जब मैं साफ होता हूँ तो
काला होता हूँ और जब
गन्दा होता हूँ तो सफेद
होता हूँ। कौन हूँ मैं?

(डैशिकर्कि)

क्या है जो हमेशा आने
वाला होता है, लेकिन
कभी आता नहीं है?

(लक)

उजली धरती, काला बीज
बड़े काम की है यह चीज़

(बाटकी)

एक डिब्बे में बत्तीस दाने
बूझने वाले बड़े सयाने

(नाँ)

एक लम्बा-सा मैदान
चार खिलाड़ी एक कप्तान

(चांग)

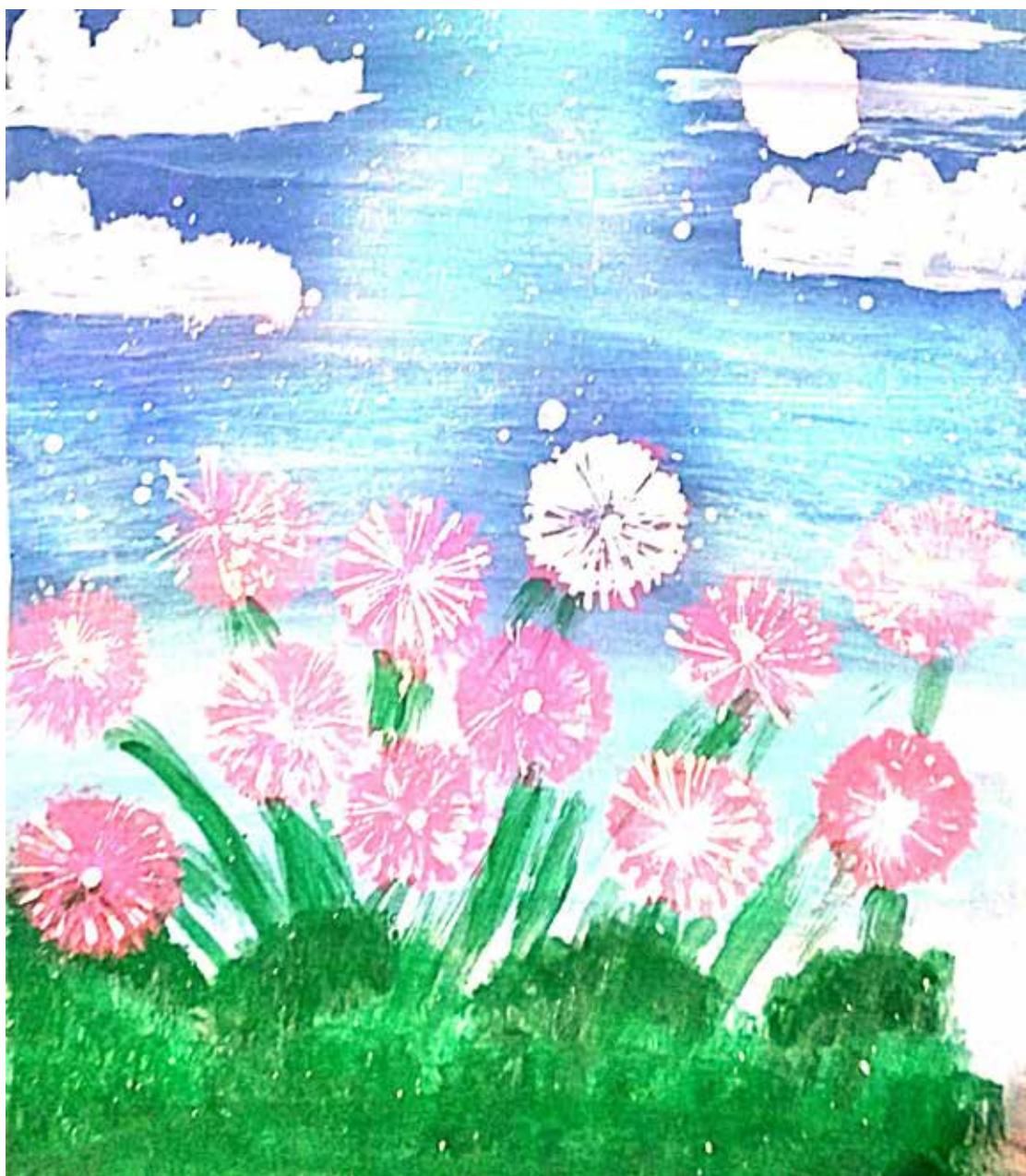
जवाब पेज 42 पर

खेलवाला

अजहर

पहली, प्राथमिक विद्यालय
बंगला पूठरी, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

हमारे गाँव में खेलवाला आया। उसने डमरू बजाया। डमरू की आवाज़ सुनकर सब इकट्ठा हो गए। 7 साल का एक बच्चा खेल दिखा रहा था। बच्चा हवा में रस्सी के ऊपर चल रहा था। उसे देखकर मुझे बहुत डर लग रहा था। खेल दिखाकर बच्चा रस्सी से नीचे उत्तर गया। खेलवाले ने जाने से पहले सब से कहा, “सब अपने घर से आटा, चावल, पैसे और तेल ले आएँ।” मुझे खेल देखकर बहुत मज़ा आया। खेल दिखाकर वह अपना ठेला लेकर चला गया। फिर हम भी अपने घर आ गए।



चित्र: राधिका, नौवीं, सलाम बालक ट्रस्ट, दिल्ली

पहली बार स्टेज का अनुभव

रिदम पंवार

क्यूनमेरी स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्रः नन्दिनी कुमारी, छठवीं, ग्राम नरेन्द्रपुर,
परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार



क्या आपने कभी स्टेज पर बोलने का अनुभव किया है? मैंने किया है। फिलहाल तो मैं आठवीं में हूँ। पर बात तब की है जब मैं छठवीं-सातवीं में था। तब जब भी मैं किसी भैया-दीदी या अन्य बच्चे को स्टेज पर बोलते देखता था तो सोचता था कि ये तो बहुत आसान है। बस स्टेज पर जाओ और जो रटा हुआ है उसे माइक पर बोल दो।

जब मैं छठवीं में था तब हमारी टीचर ने मुझे स्टेज पर समाचार सुनाने के लिए चुना था। समाचार याद करने के बाद अगले दिन मैं स्टेज पर पहुँचा। मेरे साथ मेरा दोस्त भी था जिसे स्टेज पर सुविचार बोलना था। मेरी बारी उसके बाद आनी थी। हम स्टेज पर जाने के लिए बहुत उत्साहित थे। लेकिन अन्दर ही अन्दर घबराहट-सी हो रही थी।

मेरे दोस्त ने सुविचार बोल दिया। मैंने समाचार पढ़ा शुरू किया। लेकिन उस दिन

का तापमान बताने में मैंने डिग्री सेल्सियस को सेल्सियस डिग्री बोल दिया। कुछ बच्चे तो सोच में ही पड़ गए थे कि ये क्या बोल दिया इसने। फिर लंच ब्रेक में मैं और मेरा दोस्त यह चर्चा करने लगे कि जो स्टेज पर पहली बार डाँस करने जाते होंगे उन्हें कितना साहस चाहिए होता होगा। हम तो कुछ ही शब्द बोलने में इतना घबरा रहे थे। फिर सातवीं क्लास में टीचर ने हमें बातचीत (conversation) के लिए चुना। उन्होंने कहा कि तुम कोई भी विषय पर कन्वर्सेशन कर सकते हो। फिर मेरे दोस्त ने कहा कि भाई अच्छी आदतों (good habits) का विषय कैसा रहेगा तो हमने यही विषय चुना। चूँकि अब हमें स्टेज पर बोलने का अनुभव हो चुका था तो हमने कन्वर्सेशन में अच्छा प्रदर्शन किया। और हमारी टीचर ने हमारी तारीफ की।



चित्र: सायना बनसोडे, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

कुत्तों का मातम

अंकित

चौथी, प्राथमिक विद्यालय गरवाह
बस्ती, उत्तर प्रदेश

मेरे गाँव में एक कुत्ता घायल हो गया था। एक दिन वह मर गया। उसे एक पैर में रस्सी बाँधकर घसीटते हुए ले गए और गड्ढा खोदकर गाड़ दिए। बाद में एक दूसरा कुत्ता आया और मिट्टी खोदने लगा। वह भौंक-भौंककर उसके कान में कुछ कहने लगा। मगर मरा कुत्ता नहीं उठा। उस कुत्ते ने भौंककर दूसरे कुत्तों को बुला लिया। तब सब कुत्ते भौंकने और रोने लगे। उन सब की आँखों में आँसू थे।

रामू की टोपी

आर्यवंश जैन

तीसरी, शिव नाड़र स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



चित्र: आयुषी, सातवीं, ओडा टीका सेंटर, मगरथा, बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

एक दिन रामू बहुत खुश था। उसकी छुटियाँ शुरू हो गई थीं। इसलिए वो बाजार गया। बाजार में एक दुकान में उसे एक रंग-बिरंगी टोपी दिखी। दुकान में जब वो टोपी खरीदने गया तो दुकानदार बोला, “ये टोपी कोई ऐसी-वैसी टोपी नहीं है। जब पहनोगे तब पता चलेगा कैसी टोपी है यो।” अगले दिन रामू टोपी पहनकर घूमने निकला। अचानक से ज़ोर से बारिश होने लगी। तभी उसकी टोपी एक छतरी बन गई। फिर रात हुई तो टोपी एक टॉर्च बन गई। उसकी टोपी ने ऐसे कई चमत्कार किए। जब छुटियाँ खत्म हुई तो रामू ने अपने दोस्तों को टोपी की कहानी सुनाई। कहानी सुनकर वे सब हक्काबक्का रह गए।

हाथी का घर

गाथा प्रसाद देशपाण्डे

चौथी, आनन्दी बाल भवन फाउंडेशन, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

एक घना जंगल था। उस जंगल में ढेर सारे जानवर रहते थे। वे बहुत अच्छे दोस्त थे। एक दिन बहुत तेज़ बारिश होने लगी। इतनी बारिश हो रही थी कि उन सबका घर ही गिर गया। सब बहुत दुखी हुए। चूहा, बिल्ली, कुत्ता, गधा, साँप, मच्छर, कछुआ, मछली, मगरमच्छ, डॉल्फिन, हाथी और उनके साथ एक इन्सान भी था। डॉल्फिन और मछली पानी के नीचे जाकर बैठ गए। मगरमच्छ पानी के किनारे पेड़ के पास आराम करने चला गया।

बचे हुए जानवरों में सबसे बड़ा हाथी था। वह होशियार था। काफी देर तक सोचता रहा कि इस समस्या का क्या उपाय निकाला जाए। लेकिन उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। सारे जानवर भीग रहे थे। वह इन्सान सभी जानवरों से बहुत प्यार करता था और जंगल की देखभाल करता था। उस इन्सान

का घर बहुत यानी बहुत बड़ा था। इतना बड़ा कि उसमें सभी जानवर समा सकें। इन्सान और इन सभी जानवरों की अच्छी दोस्ती थी। वह सभी जानवरों को घर में ले गया। सभी जानवर घर में तो गए लेकिन जानवरों को वह घर बिलकुल पसन्द नहीं आया। फिर वे जानवर वापस जंगल में चले गए। बारिश फिर भी रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

तभी हाथी को एक तरकीब सूझी। वह बोला, “मैं उस बड़े पेड़ के नीचे जाता हूँ।” बिल्ली बोली, “तुम्हें बारिश लगेगी।” हाथी बोला, “मुझे तो बारिश में भीगना पसन्द है। वैसे भी पेड़ के नीचे बारिश नहीं लगेगी।” और हाथी पेड़ के नीचे जाकर खड़ा हो गया। हाथी के नीचे गधा जाकर रुका। गधे के नीचे कुत्ता जाकर रुका। कुत्ते के नीचे बिल्ली जाकर रुकी। बिल्ली के नीचे चूहा, साँप और मच्छर जाकर रुके।

यह घर सभी जानवरों को बहुत पसन्द आया।

मुण्डन

अंशिका यादव
तीसरी, कम्पोजिट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे भाई का मुण्डन था। नाऊ अंकल ने उसके सारे बाल उस्तरे से छील दिए। वो खूब रोया। पापा उसको पकड़े रहे। बाल छिल जाने के बाद उसके सिर पर दही और धी लगाया गया। फिर शाम को दावत हुई। टेंट लगा। चाट, पकौड़ी, बताशे, ठण्डा, चाऊमीन सब बना था। हम उसे टकला कहकर चिढ़ा रहे थे।



चित्र: अरविंश, दूसरी, अ.जी.म प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

दो मगरमच्छ

तनिष
पाँचवीं

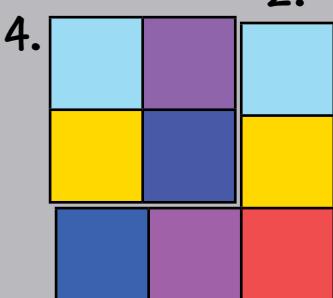
शासकीय प्राथमिक शाला
आमछा कलाँ लारी प्रोजेक्ट,
औबेदुल्लागंज, रायसेन
मध्य प्रदेश

एक दिन हम तालाब धूमने गए थे। हम वहाँ नहाए-तैरे। बहुत मज़े कर रहे थे। तभी वहाँ पर एक मगरमच्छ आ गया था। हम सब तालाब से बाहर हीट (निकल) गए। मगरमच्छ खाने की तलाश में था। हम सब घबरा गए। फिर हम वहाँ से घर चले गए।

अगले दिन जब हम धूमने आए तो दो मगरमच्छ मुँह फाड़कर बैठे थे। और उनके बच्चे मर्स्ती कर रहे थे। फिर हमने मोबाइल से वीडियो बनाए और घर जाकर सबको बताए।

1. 99

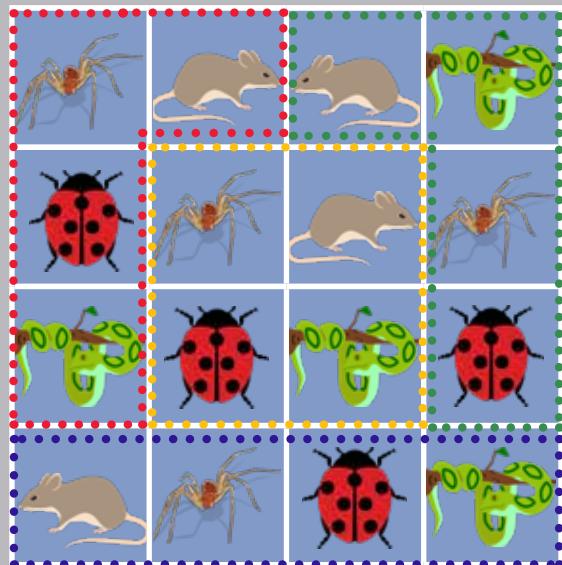
5.



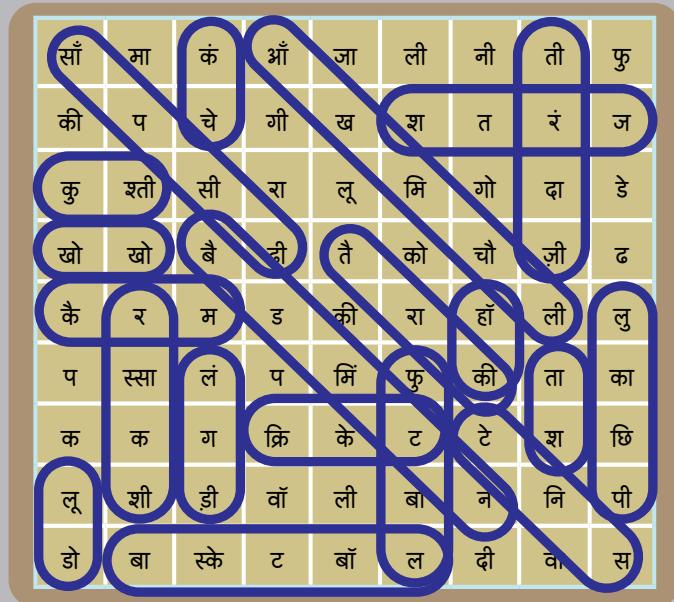
2.

3. क्योंकि 1 घण्टा
30 मिनट और 90
मिनट बराबर ही
होते हैं।

2.



6.



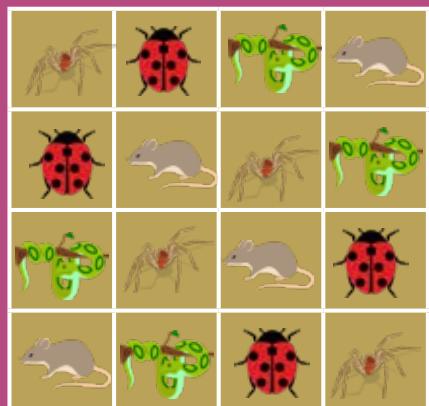
8.



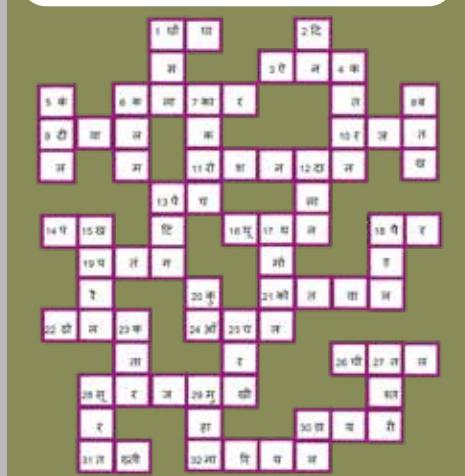
7.

इन संख्याओं का पैटर्न इस प्रकार है:
 $5 - 3 = 2$, $3 - 2 = 1$, इसलिए $2 - 1 = 1$

9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



सुडोकू-89 का जवाब

2	1	9	4	8	3	7	5	6
6	7	8	5	1	9	2	3	4
5	3	4	2	7	6	9	8	1
8	6	1	7	4	2	3	9	5
4	5	2	3	9	8	6	1	7
3	9	7	6	5	1	4	2	8
7	8	5	9	2	4	1	6	3
1	2	6	8	3	7	5	4	9
9	4	3	1	6	5	8	7	2

तुम भी जानो

26 जून को अमेरिका के दक्षिणी प्रदेश जॉर्जिया में एक उल्का पिण्ड के कुछ टुकड़े एक घर पर गिरे। ये इतनी रफ्तार से गिरे कि छत को चीरकर भीतर चले गए। इनमें से एक टुकड़े ने तो घर के फर्श में डेंट कर दिया, जबकि वह महज एक रुपए के सिक्के जितने आकार का था। शुक्र है कि मकानमालिक को कुछ नहीं हुआ जबकि वे इस टुकड़े से सिर्फ 4 मीटर की दूरी पर थे। वैसे तो पृथ्वी पर हर साल करोड़ों उल्का पिण्ड गिरते हैं लेकिन इनमें से ज्यादातर रेत के कण जितने छोटे होते हैं और हमारे वायुमण्डल में ही जल जाते हैं। कुछ ही टुकड़े ज़मीन पर गिरते हैं। इस उल्का पिण्ड के लगभग 50 ग्राम का अध्ययन करके एक भूवैज्ञानिक ने पाया कि यह पृथ्वी से भी पुराना है।

घर पर गिरा एक उल्का पिण्ड



बम्पी से मिलो

वैसे तो जब भी हमें मौका मिला है समुद्र की गहराइयों में बसे जीवों को देखने का तो वे काफी भयानक ही लगे हैं। पर शायद ये पहला मौका है जब कुछ सुन्दर मछलियाँ देखने को मिली हैं। इनमें तीन नई किस्म की मछलियाँ हैं। ये सभी स्नेलफिश हैं और अमेरिका के पश्चिमी समुद्र में सतह से 3000-4000 मीटर की गहराई पर पाई गई हैं। इन्हें स्नेलफिश इसलिए कहा जाता है क्योंके अक्सर ये पत्थरों और समुद्री शैवालों से चिपकने के लिए अपने पेट पर मौजूद चूसने वाले चक्र/डिस्क का इस्तेमाल करते हैं — कुछ उसी तरह जैसे घोंघे करते हैं। ज्यादा गहराइयों में ये मछलियाँ इसी तरह केकड़ों से चिपककर लिफ्ट भी लेती हैं। इन तीनों में से एक का नाम बम्पी स्नेलफिश रखा गया है।

मुक्त

झोंगो चिड़िया को मैं रोज़ देखता हूँ। अपने घर से। यूकेलिप्टस पेड़ के ऊपर। उसका धोंसला भी है वहाँ। घर में मेरा ऐसा कोई दिन नहीं गया जब मैंने झोंगो को नहीं देखा। झोंगो को देख-देखकर चाय पीना और अखबार पढ़ना एक आदत-सी हो गई थी।

आज जंगल में भी एक झोंगो देखा। वही रंग, वही काली-काली आँखें। टहनी पर बैठने का अन्दाज या फिर उड़ने का पैटर्न भी बिलकुल वही था — 3-4 सैकंड के लिए उड़ना और वापिस टहनी में आ जाना। वैसी ही छलाँगें, पीछे-पीछे भागना। जो मैं घर पर रोज़ देखता था। झोंगो की “की-की” आवाज़ सुनकर एक पल के लिए ऐसा लगा मानो मैं अपने घर की कुर्सी पर बैठा हुआ हूँ। लेकिन मैं तो जीप पर हूँ। पेंच के जंगल में।

सब कुछ एक जैसा होने के बावजूद जंगल का वो झोंगो मुझे नया जैसा लगा। उसकी वजह है ये जंगल। जंगल का घनापन, खामोशियाँ, दूसरी चिड़ियों के बीच झोंगो की आवाज़ को पहचान पाना — ये सब कुछ मेरे लिए खास था। और झोंगो को पहले से जानने के बाद भी थोड़ा जानना रह गया था।

झोंगो का आज का आसमान मुझे आज ज्यादा नीला और बदला हुआ लगा।



कुलदीप दास

जंगल का झोंगो

